CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समाधितंत्रकेपत्र खंडितपत्र २२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ई०॥ॐनमः सिद्धेभ्यः॥श्रीवीतरागाय
नमः॥ ॥अथ समाधितंत्रस्य टीका लि
ख्यते॥ जिनान्प्रणम्याखिलकर्ममुक्तान्
गुरून्सदाचारपरांस्तथैव समाधितंत्र
स्य करोमि बालावबोधं नम्य विबोधनाय
१॥श्रीकुंदकुंदाख्यगुरून्नमामि नरामरैर्वं
दितपादयुग्मं॥ यस्योपदेशामृतपानपुष्ट
भव्यासवाब्धिं विषमं तरंति॥२॥धर्मार्थिनां
धर्मविकासहेतु॥धर्मार्थिनापर्वतनाम॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥समा०॥ त॥११॥परस्परइप्रवेशरहित॥१२॥एवंअधिकारबारहतेहनोविचारकरीनइ॥जीवपदार्थंओलखिपइ
॥२॥ परिणमंतोजीवतेण॥परिणमइतेपुद्गलद्रव्य॥जीवनोउपयोगतेपरिणामकहियइ॥अनइरूपहू
तीरूपांतरइपरिणमइ॥गंधहुंतीगंधांतरइपरिणमइ॥रसहुंतीरसांतरइपरिणमइ॥स्पर्शहुंतीस्पर्शां
तरइपरिणमइ॥शब्दहुंतीशब्दांतरइपरिणमइ॥तेपुद्गलद्रव्यकहियइ॥परिणामकारइतेचेतनस्वभ
ावजीवन॥अनइअनेकप्रकारइपरिणवइ॥शब्दइरूपइगंधइ॥रसइ॥स्पर्शइ॥तेअचेतनपुद्गल
पिंडरूपीजाणिरामतं॥अनइजेधर्मद्रव्य॥१॥अधर्मद्रव्य॥२॥आकासद्रव्य॥३॥कालद्रव्य॥४॥एता
चारिणमाधिकारःप्रथम॥१॥वस्तुहुनिश्चयनयप्राणदर्शन॥१॥ज्ञान॥२॥चैतन्य॥३॥वीर्य॥४॥कहि
यइ॥तिनिप्राणइकरीनइजीवइ॥तेजीवसुखपिंडकहियइ॥अनइबाह्य॥विवहारनयतिनिकरीनइ
द्रव्यप्राणी॥विवहारज्ञानदृष्टीसइ॥मागीणमा हिंगूंतो॥भावप्राणकोउपराजनस्वरूप॥इंद्री॥१॥
शरीर॥२॥उसीसोश्वास॥३॥आउषो॥एवंविवहारकर्मप्राणकहियइ॥तिनइप्राणइकरीनइ॥जी ॥२॥
वइतेविवहारजीवकहियइ॥पावइ॥अनादिकालजीमोणमस्तु॥सांप्रतवर्त्तमानकाइजीवछइ॥
आगइआगवतोपदार्थहंसतु॥अनंतकालजीविस्यइ॥अनेरा॥धर्मअधर्मकालआकाशपुद्ग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥समा०॥ रना वहुनी वेगला निर्विकार ॥ अनइ जीवद्रव्य ॥१॥ पुद्गलद्रव्य ॥२॥ कालद्रव्य ॥३॥ एतां त्रिणि द्रव्य अनेक कहि
॥३॥ यइ जीवराशि अनंत अनंत विकार रूपता ॥ पुद्गल तेही अनंत विकार अनंतानंत दीसइ छइ ॥ कालद्रव्य असंख्या
त संख्या अनेक विकारवंत नहीं छइ ॥ अनेक द्रव्य जीवादि ॥३॥ एकद्रव्य धर्मादि ॥३॥ एकानेक निरूपणाधिकारः ४
जीवद्रव्य ॥१॥ अनइ पुद्गलद्रव्य ॥२॥ धर्मद्रव्य ॥३॥ अधर्मद्रव्य ॥४॥ कालद्रव्य ॥५॥ एवं द्रव्य पांच ॥ तेहनइ आश्रम दे
न आकाश छइ ॥ अवकाश अरूपी मध्य अवकाश देउ आकाश छइ ॥ अनेरा जीवादि द्रव्य पांच अखेत्री कहियइ ॥
कोई तु रूपही कुं आश्रय न देइ ॥ एक खेत्री आकाशद्रव्य बीजा अखेत्री जाणिजो वुं ॥ खेत्री अखेत्री निरूपणा
धिकार ६ ॥ एक खेत्र छोडी नइ बीजइ खेत्र जाइ ते क्रिया कहियइ ॥ ते क्रिया करता जीव अनइ पुद्गल द्रव्य ही दीसइ
छइ ॥ अनेरा द्रव्य ॥ धर्म अधर्म काल आकाश एवं च्यारि ॥ अक्रियावंत स्वभावी कहियइ ॥ चलन क्रिया न क
रइ ॥ क्रिया अक्रियाधिकारः ॥ धर्मद्रव्य ॥१॥ अधर्मद्रव्य ॥२॥ काल ॥३॥ आकाश ॥४॥ एवं च्यारि ४ द्रव्य निस
कहियइ एक स्वभावी ॥ अनइ जे जीवद्रव्य ॥१॥ बीजउ पुद्गलद्रव्य ॥२॥ द्रव्यार्थिक नयइं जद्दे खिपइ तो सा
श्वता ॥ अनइ ॥ पर्यायनयइं तो विनश्वर दीसइ छइ ॥ द्रव्य निर्मल सुखपिंड कहियइ ॥ गुण दर्शन ज्ञान कहि ॥३॥
यइ ॥ द्रव्य अनंतगुण ॥ एक स्वभावी जिम अग्निकुंड ऊष्णतागुण ॥ अनइ प्रकाशगुण ॥ तिम जीवकुं दर्शनज्ञा
नगुण ॥ जाणिजो वतुं ॥ पर्याय ते कहियइ ॥ जिहां जीवद्रव्य घणा शरीर ते शरीरपर्याय कहियइ ॥ अनेक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धारिष्या॥ योबालबोधोपिविरच्यतामया॥ आत्मनेवात्तिकरूपभाषया॥ २॥ तथामूलसूत्रं॥ श्लोक॥
येनात्मेवुध्यतात्मैवपरत्वेनैवचापरं॥ अक्षयानंतबोधाय॥ तस्मैसिद्धात्मनेनमः॥ १॥ अर्थ॥ जिणिंअना
दिकालनीमोहनिद्राकोउपशमपामीनइ॥ आपनपोआपनपासिदेखो॥ अनइ॥ आपनहूंतीदीजो
पुद्गलप्रपंचतेसर्वआपनागुणहूंतीअतिवेगलोदेष्यो॥ इसोअक्षयपरणाम्यनोबोधरूपनिज्ञानप्रका
शरूपछइ॥ जेहनइतेहतइअनादिसिद्धस्वभावकोनमस्कारहूंकरुं॥ हेजीश्रीगुरु॥ जिनीआपतो॥
आत्मा आपणपासिआपुणहीदेख्योजाण्यो॥ तेकुणजीरागद्वेषनहारजाननहारकोईदीसतोनहीन
मगोत्रहितडीवनामापदार्थ॥ छइकिनही॥ मुझकुंसंदेहछेजीवपदार्थकोसत्यरूपकहिजीश्रीगुरुजी
वपदार्थनोलक्षणअन्नाहगुरुःहेशिष्यहेमनः॥ जेइसोसंदेहकारइछइजीवछइकिनही॥ इसीभांति
कोकरणहार॥ तेहीजीवजाणितू॥ जीवपदार्थयुरवइ॥ इसोविचारनउपजइ॥ एमनजइजीवपदार्थन
हीतोपूछइछइतेऊन॥ उक्तंचसिद्धांते॥ परिणाम॥ १॥ जीव॥ २॥ मुत्तं॥ ३॥ सपदेसं॥ ४॥ एग॥ ५॥ खित्त॥ ६॥
किरियाय॥ ७॥ णिच्चं॥ ८॥ कारण॥ ९॥ कत्ता॥ १०॥ सव्वगय॥ ११॥ इदरहिंयपवेसे॥ १२॥ १॥ परिणाम
१॥ जीव॥ २॥ मूर्ति॥ ३॥ सप्रदेश॥ ४॥ एक॥ ५॥ क्षेत्र॥ ६॥ क्रिया॥ ७॥ नित्य॥ ८॥ कारण॥ ९॥ कर्त्ता॥ १०॥ सर्वग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥समा॥ हैनोकर्त्ताहोइ॥अनइजोविवहारनयिंदेषियइ॥तोशुभोपयोगइपरिणामकरीनइ॥पुण्यकर्म्मकोक
॥४॥ र्त्तादीसइछइ॥अशुभोपयोगइपरिणमीनइ॥पापकर्म्मकोकर्त्तादीसइछइ॥चिदानंदरामउं॥अनइशु
भाशुभकर्म्मकोनिमकर्त्ताजीवउ॥तिमशुभाशुभकर्म्मकाफलकोभोगिणोभोक्ताछइ॥विवहारइरू
नो॥आपणीलछिपामीनइ॥निर्म्मलदर्शनज्ञानस्वभावइकरीनइआपणोसुद्धसुखपिंडपरभावकु
तीवेगलोदेषइ॥जवसम्यग्दर्शनज्ञानानुष्टानसम्यक्चारित्रकहियइ॥विवहारकर्म्महुतीवेगला
तिणइसम्यक्चारित्रइकरीनइजवभावइआत्मतत्वकउंतवशुद्धोपयोगकहियइ॥स्वभावउम्हारो॥ति
णीशुद्धोपयोगइपरिणम्यो॥निर्विकारहंसनु॥कर्म्मबंधनकोसयकर्त्ताहोइ॥अनइतोकर्म्मबंधनस्
यकीधातीमोक्षफलनोभोक्ताछइ॥रामउं॥अशुभोपयोगअसंयमभावना॥शुभोपयोग॥संयमभा
वना॥शुद्धोपयोग॥शुभाशुभहुंतीवेगलोउपशमभाव॥शांतपदत्तेहनोकर्त्ताछइ॥उपयोगीहं
सउं॥अनइपुद्गलद्रव्य॥आपनागुणपर्यायकोकर्त्तादीसइछइ॥धर्म्मद्रव्यआपनागतिलक्षण
कोकर्त्ताछइ॥अधर्म्मद्रव्यस्थितिकर्त्ताछइ॥आकाशद्रव्यअवकाशदानकर्त्ताछइ॥कालद्रव्यवर्त्तनाल ॥४॥
क्षणकर्त्ताछइ॥इमआपनाआपनास्वभावगुणाक॥तोसर्वद्रव्यदीसइछइ॥कर्त्तानिरूपणाधिकारः
१०॥आकाशद्रव्यसर्वगतकहियइ॥अधर्म्मद्रव्यजीवअनंतप्रदेशात्मक॥अनंतअलोक॥अनइअ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0:In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ल॥ चेतनागुणरहित अजीव कहियइ॥ इति जीवाजीवाधिकार॥ २॥ अमूर्त्तो सुखपिंड तेहनागुण छंती वेग
लो स्पर्श रस गंध वर्णवंती मूर्त्ति कहियइ॥ तिणि कारणिं पुद्गलद्रव्य मूर्त्तिवंत कहियइ॥ अनइ पुद्गल अपं
च सुं मिल्यो विवहारनयइ॥ मूर्त्तिवंत जीव पदार्थ कहियै छइ॥ पिणि निश्चयनय पविचारसां मूर्त्ति विका
र छूंती वेगलो दीसइ॥ धर्म्मद्रव्य॥ १॥ अधर्म्मद्रव्य॥ २॥ आकाशद्रव्य॥ ३॥ कालद्रव्य॥ ४॥ एता अमूर्त्ती
मूर्त्तामूर्त्ताधिकार:॥ ३॥ जीवद्रव्य॥ १॥ धर्म्मद्रव्य॥ २॥ अधर्म्मद्रव्य॥ ३॥ एवं अत्रिणि॥ असंख्यातप्रदेशी
कहियइ॥ अनइ जे पुद्गलद्रव्य ते आवे॥ भागी परिमाणु एकप्रदेशी होइ॥ एही अविभागी परिमाणु॥
स्निग्ध चीकनी॥ अनइ रूखी एकत्र मिलीनइ:॥ जव खंधरूप बंधाइ॥ तव संख्यातप्रदेशी॥ असंख्या
तप्रदेशी॥ अनंतप्रदेशी॥ पुद्गल कहियइ॥ अनइ अनंतगुणविकार इ करीनइ देखिपइ॥ तो अनंतप्रदे
शी पुद्गलद्रव्य कहियइ॥ अनइ जे कालद्रव्य ते अप्रदेशी कहियइ॥ कोहेतुइं मिलण अनावात॥ का
लद्रव्य के अणु असंख्यात लोकाकाश प्रमाण बइ परंतु अनूं मिलइ नहीं॥ अनइ तेहनी पर्याइ विव
हार काल समइ कहियइ॥ तिपिण॥ आगिलो समय या बिला॥ समय सुं न मिलइ॥ तिनि कारणि काल
द्रव्य अप्रदेशासक कहियइ॥ प्रदेशी अप्रदेशी गुणालसणाधिकार:॥ ४॥ इसार्थिकनय की विचारि
यइ जो तो॥ धर्म्मद्रव्य॥ १॥ अनइ अधर्म्मद्रव्य॥ २॥ आकाशद्रव्य॥ ३॥ एवं त्रिणि द्रव्य॥ एक कहियइ॥ किस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥समा०॥ इइ।कुंनहीकुंकोईणमिलइ।जीवअापनोचेतनागुणकुंणाहीकुंनदेषइ। धर्मद्रव्यअापणोगतिलक्षणकुंणाही
॥५॥ कुंनदेइ।अधर्मद्रव्यस्थितिलक्षणकुंणाहीकुंनदेइ।कालद्रव्य।अापनोवर्त्तनालक्षणकुंणाहीकुंनदेइ। अाकाशद्र
व्यअापनीअवकाशदानशक्तिकुंनहीकुंनदेइ।पुद्गलद्रव्यअापनीमूर्त्तिकुंणाहीकुंनदेइ। इसीपरिषद्रव्यएकइखे
त्रइरहतांभी।कोइकुंनहीसुं।अापणगुणइकरीनइमिलतांनदीसइ। सर्वजुदाअापणाइस्वभावइवर्त्तइ। सदाका
लसर्वइतरेतरपरस्पराइंप्रदेशरहितनिरूपणाधिकार।१२।अथानंतरेजीव।नवपदार्थमाहिमिलीनइ।जि
मअंनाचइवइ।तेहीस्वरूपसुनि।अापनोविनोदनाटक।दर्शन।१।ज्ञान।२।वीर्य।३।चेतनागुण।४।सहितसुर
वपिंडतुं।जीवतत्वकहियइ।१।बीजोमूर्तिवंतपुद्गलपिंड।स्पर्श।१।रस।१।गंध।१।रूप।१।शब्द।१।एवंपांच
प्रकारपरिमाणमिलीनइजेपिंडबंधाने।रूपीतेअजीवतत्वकहियइ।२।दयादानेकीरुचि।१।देवतत्व।१।
गुरुतत्व।१।कीभक्तिपूजासत्कारइकरितइ।सामाइकप्रतिक्रमणपरिणामइकीनइ।अापुणीनदागर्हाकर
तांजीवशुभपरिणामजेवर्त्तइतेभावपुण्यतत्वकहियइतिणीभावपुण्यइंकरीनइ।जेउपजइसातावेदनी ॥५॥
भोगकोमुकांमशुभप्रकृति।शुभलक्षण।सर्वांगसुंदरता।सोभाग्यादिगुणअंबार।सर्वजनप्रकंसुहावनो।
मनोहर।पुण्यपवित्र।शुभपुद्गलपरिमाणमिलीने।जेनीपजइरूपतेद्रव्यपुन्यकहियइ।पुण्यतत्व।३।मि
थ्यात्व।५।अव्रत।१२।क्रोध।१।मान।१।माया।१।लोभ।१।मद।१।मछर।१।परिणामइकरीनइ।अार्त्तरौ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकारइ। जिमसोनाकुं अनेकप्रकारघाटहोइ। तिमजीवकुंगतिचारिनाशरीरपर्यायहोइ। पुद्गलपरिमाण
द्रव्य। स्निग्धरूक्षतागुणपुद्गलको। स्पर्श।८। रस।५। गंधरूप।५। शब्द।१। एपर्यायकहियइपुद्गलद्रव्यका
पर्यायनपिंनोविनसतरहीसइ। पुद्गलद्रव्यअनइजीवद्रव्यदुइही। द्रव्यगुणाइणास्वतां जिमसोनोद्रव्य
गुणइसाश्वतो। घाटकंकणमुद्रादिकपर्यायगुणविणसइ। नित्यअनित्याधिकार।८। पुद्गलद्रव्यअजीव
कुंदेहरूपहोइनइउपकारइ। इंद्रियविषयविकारइकरीनइउपकारइ। वाणीकरीनइ। उस्वासनिस्वास
इकरीनइ। पुद्गलद्रव्यजीवकुंउपकारइकरइ। धर्मद्रव्यजीवकुंचालतांगमनकरतांउपकारकरइ। अ
नइजीवकुंस्थितिकरतांअधर्मद्रव्यसहाइहोइ। आकाशद्रव्यअवकाशदेइनइ। जीवकुंअवगाहन
उपकारइ। कालद्रव्यजीवकुंवर्तनागुणइकरीनइउपकारकरइकैरइ। एवं। पुद्गलद्रव्य।१। धर्मद्रव्य।१।
अधर्मद्रव्य।१। आकाशद्रव्य।१। कालद्रव्य।१। असुखजीवकुं। पांचइउपकारइ। अरद्रजेजीवद्रव्यते
अजीवद्रव्यअऊकाइउपकारतकरइ। गुरुशिष्यसबंधइकरीनइ। परस्परजीवजीवकुंउपकारकरइ। पि
णिअजीवपदार्थकुंजीवउपकारकहीइनकरइ। कारणअकारणाधिकार।९। जीवनामायदार्थ
सुद्धपरिणामिकतयिंकरीनइ। आपनास्वभावकउदयकोकर्ताबइ। शुद्धनिश्चयनयपिंविचारतां। वं
धमोक्षइकनावरूपगुणपर्यायशरीरादिककोकर्त्तानिहोइ। एकआपनोस्वभावदर्शनज्ञानते।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥समा०॥ आसतत्वकुंतीप्रतिकूल।मिथ्यात्वरागइकरीनइ।स्निग्धचीगटोयरिणाम।तेनावबंधकहियइ।तिनीभा
॥६॥ वबंधइकरीनइ।जिमतेलकइमईनइकरीनइचीगटोशरीर।तिहांजिमसूक्ष्मधलिलागइ।तिमरेजीव।रागद्वे
षमिथ्यात्वपरिणामइंकरीनइचीगटोसुखपिंड।तिहांनिबडकर्म्मबंधलागइ।तेहनेद्रव्यबंधकहियइ।बं
धतत्वं॥८॥कर्म्मबंधननिर्मूलसमर्थआत्मस्वरूपकोनिर्म्मलभाव।सुषपिंडकाअनुभवचेतानमोक्ष
कहियइ।अनइतिनीभावमोक्षकरलइकरीनइकर्म्मकलंककुंतीजुदो।अरूपीसुखपिंड।आवगुण।
करिपूरोनिर्विकल्पनीवडइ।तेद्रव्यमोक्षकहियइ।मोक्षतत्वं।हेमनःजोजीवपदार्थनहीतोबइमनव
तत्त्वकोविचारणहारकुणकहियइ।इसाप्रपंचसंसारकाकुणप्रकारइजइजीवपदार्थनहोइ।हजी
व।परकहताआतमगुणकुंतीवेगलोपुद्गलप्रपंचनिहांमनराचइछइ।भ्रमविश्वासकरइछइ।तेअज्ञान
मोहकीमाजाणिनूं।तिनीमोहनिद्राइंकरीनइनिरंतरइंद्रियविकारविषयमलतिनीकरीनइमलिनछु
ईछइचेतन्यमूर्त्तिरीतिनिकारणिनूंसंदेहकरतोमहादुःखपरंपरानेगवतो।आपनीशक्तिमहिमानसंभा
लइहेमनः।जिनीजाणइ।अनादिकालकाकर्म्मकलंकक्षयजाइ।तिहांरामतुंशरीरगामइवसइछइ।असा ॥६॥
वधानयनइ।आपनयोकाईनजानइजिहांजीवनूंछइतिहांइंद्रीविकारतोनजोइयइ।तेरीमहिमाहेस
जिहांतिहांमनमहिमाकिमयामइ।जइआयनेस्वभावसंभालइ।शरीरहेचालइ।अरूपीरचतुंअनादि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संख्यातोलोकतिहांसर्वत्रआकाशद्रव्यछइ॥अनइधर्म्मद्रव्य॥अधर्म्मद्रव्यजीवद्रव्य॥एअसंख्यात
प्रदेसीकहियइ॥लोकाकाशप्रमाणहोइ॥प्रदेसगुणइकरी॥जिमएकजीवअसंख्यातप्रदेसीकहि
यइ॥अनंतजीवतिमजजाणवा॥पुद्गलद्रव्यसर्वत्रलोकाकाशमाहिवर्त्तइ॥अनंताविकारवंतपु
द्गलरूपाएकप्रदेसी॥संख्यातअसंख्यातअनंतप्रदेसीकहियइ॥जीवद्रव्य॥अनइपुद्गलद्रव्यकुंइहां
संकुचइरही॥अनइविस्तरइ॥दीवानीजोतिजिमढांकइनाकेइमोटइमूकियइतिसोप्रकाशविस्त
रइ॥तिमजीवपणथिजिसोशरीरयहइतिसोसुखपिंडविस्तारयामइ॥अनेअनइपुद्गलद्रव्यगलइपूर
इ॥नान्हीअविभागीपरिमाणू॥जइविकारकरइ॥तोत्रिलोकप्रमाणहोइ॥अइसीशक्तिछइ॥पणंअ
इसीशक्तिव्यक्तप्रगटरूपनहीइ॥एकपरमाणूएसीप्रवृत्तावलीगतिकरइतउचउदहराजूजाइमंदग
तिकरइतउजिनआकाशप्रतिष्ठइ॥नदूहीउलटपिलटइकालद्रव्यजिमरत्नावालकाखंड॥परस्
परइमिलइनही॥तिमकालनोअणूपाछिलो॥आगिलोएकनहोइ॥यद्रोइमिलकरीलोकप्रम
ाणनहोइ॥इम्मजोअपेक्षायिकरिसर्वत्रलोकइकालद्रव्यछइ॥सर्वगताधिकारः॥सर्वद्रव्य॥आका
श॥१॥धर्म्म॥२॥अधर्म॥३॥काल॥४॥पुद्गल॥५॥जीव॥६॥एकइक्षेत्रअवगाहिकालकारहइछइ
अन्योन्यपरस्परइप्रवेशइमिल्या॥पिणिनिश्चयदृष्टिवर्त्ताआपनोआपनोस्वभावगुणकोइनछो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

॥ समा० ॥ ॐ ॥ १ ॥ जयंतिपस्यवहैंतोपिभारतीविभूतयस्तीर्थकृतोप्यनीहितः ॥ शिवायधात्रेसुगतायविष्णवेजिनाय
॥ ७ ॥ तस्मैसकलात्मनेनमः ॥ २ ॥ अर्थ ॥ ज्ञानावरणीकर्मक्षयकरीनइ ॥ अनंतज्ञानप्रकटकीधो ॥ दर्शनावरनीकर्म
क्षयकरीनइ ॥ अनंतदर्शनप्रकटकीधो ॥ मोहनीकर्मक्षयकरीनइ ॥ अनंतसुखप्रगटकीधो ॥ अंतरायक्षय
करीनइअनंतवीर्यप्रकटकीधो ॥ जिनवीतरागेइ ॥ अनंतचतुष्टयमहिमा ॥ जीवपदार्थकीशाश्वतीसंपदा
प्रकटकरीनइजगत्रयकुंपूज्यआराध्यतीर्थंकरदेवहूयो ॥ तेहनाइंद्रियविकारविलयगया ॥ मनोविकारतेही
क्षयगयो ॥ अष्टादशदोषरहितनिर्विकारपुरइपकृतो ॥ अष्टादशदोषतेकिसाजीश्रीगुरु ॥ क्षुधातृषाभ
यमरोषसर्वजगत्रयकुंपीडइ ॥ मानीपुरुषकोमानमोडइ ॥ इसीक्षुधनोदोषकेवलीकुंनहोइ ॥ १ ॥ बीजोत्रिषा
दोषउष्णकालइअनेकजीवयांनीपषइमरणपामइतेत्रिषादोषकेवलीकुंनहोइ ॥ २ ॥ भयकापरपंनोनहोइभय
सात ॥ इहलोककोभयनहोइजगत्रयकानाथकुं ॥ १ ॥ परलोकनभयआगिलाभयकोडरनहोइमुक्तिगामीकुं ॥ २
आगइसंसारनहीतिनअत्राणभयनहोइ ॥ ३ ॥ सर्वजत्रयकाआराध्यकुं ॥ ४ ॥ मरणभयविवहारप्राणवियोगते
नहोइवीतरागकुं ॥ ५ ॥ आकस्मिकभयनहोइसहसाकारअनचिंतव्योभयहोइतेआकस्मिकभयकहियइ ॥ ७ ॥
तेभयनहोइकेवलीकुं ॥ ६ ॥ कीर्तिभयनहोइ ॥ कीर्तितेकहियइजेसर्वजीवकुंस्तवनीयपूजनीयमनइव
सइगुणमहिमातेहनोविघ्नभयकहियइतेनहोइसकलसिद्धकुं ॥ ७ ॥ अपकीर्तिभयतेकहियइजेकी ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इध्यांनकृष्णनीलकापोतरूपपरिणामजेवर्त्तइछइजीव॥ तेभावपापकहियइ॥ तिणीभावपापइकरीनइ॥ असा
तावेदनीइ:कर्म्मभोगकेजोमुक्तामजीवकुंमहादुःखकौकारण॥ रोगकेजोभाजनहुतोस्पयनत॥ उरूसताइगतिथय
नउ॥ अनेकप्रायहाउमूलपुद्गलपरिमाणमिलीनइजेतीयजइरूपतेद्रव्यपापकहियइ॥ पापतत्वं॥४॥ निरा
लंबनिर्विकारशुद्धआत्मतत्वतिहांकुतिविपरीतपणउहैं॥ जेरागद्वेषरूपपरिणाममोहमिथ्यामतिपरिणा
मभावआश्रवकहियइ॥ तिणीभावाश्रवइकरीनइकर्म्मवर्गणाजोग्यपुद्गलपरिमाण॥ मनोवचनकायजो
गद्वारइकरीजेआश्रवहोइतेद्रव्याश्रवकहियइ॥ आश्रवतत्वं॥५॥ शुभाशुभकर्म्महुतीउदासपरिणा
म॥ सम्यग्दर्शनकीरुचिकेरीनइ॥ संसारशरीरभोगहुतीभयपरीनजाण्योजीव॥ तेहनापरिणामभावसंवर
कहियइ॥ तिणीभावसंवरइकरीनइ॥ नवाकर्म्मतेहनोआश्रवरुंधीक्रतीतेहनइद्रव्यसंवरकहियइ॥ जेतो
कालभावसंवरइवर्त्तइसम्यग्दृष्टी॥ तेतोकालद्रव्यसंवरकहियइ॥ संवरतत्वं॥६॥ इ:कर्म्मप्रतिनिवद्धअ
नादिकालकाबांध्यातेहतोइसडुनोनिर्जराकहियइ॥ वारहभेदतप॥ दशभेदधर्म्मभावना॥ धर्म्मध्यानभाव
नाशुद्धोपयोगपरिणामशुक्लध्याननिर्विकारयत्कौ॥ अनुभवचायनेत॥ स्थिरपरिणाम॥ तेभावनिर्जरा
कहियइ॥ तिणीभावनिर्जराइकरीनइ॥ शुद्धोपयोगपरिणामकरीनइ॥ जेनीरसानीकर्म्मवर्गणामुषपिंड
काप्रदेशखिरइ॥ ज्ञानावरणादिजेकर्म्मएकदेशद्रूरडइबइ॥ तेद्रव्यनिर्जराकहियइ॥ निर्जरातत्वं॥७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥समा०॥ नंतवीर्यकुस्वलइ अनुनयभाषाशरीरकइ॥ संबंधइ उपजइ॥ जिकाहोयनहालइ॥ अनक्षरीकवानी॥ केवली
॥८॥ कीवानीकुं अक्षरमहोइ॥ सुनतांजीवकुं वइरभावविलपजाइ॥ बोधिबीजऊपजइ॥ तेवानीसुनतांजीवकुं॥ अ
वधिज्ञानऊपजइ॥ इसीवानीसर्वजीवकुंहितकारी॥ जपवंतीवर्त्तइ अनइंइद्रधरनेंद्रचक्रवर्त्तिबलदेववासु
देवकरिपूजनीक॥ अष्टप्रातिहार्ज॥ चउतीसअतिसयकीसंपदासमोसरणविभूति॥ जगत्रयकुंआश्चर्य
कारिनीसामिग्रीछतीनवांछइ॥ सहजस्वभावतोवीतराग॥ इसोअनंतचतुष्टसंपदाकोधनीशिवकहियइ॥ त्रै
लोकनाथकल्याणमहिमाकरइजेहनी॥ धाताब्रह्माकहियइ॥ धर्म्मसृष्टिकोकरणहार॥ सहजगतिकोज्ञा
नहारसुगतकहियइ॥ जगत्रयकोस्वरूपकोजाणविष्णुकहिये सर्वकर्म्मकोजीतनहारजिनकहियेज
गत्रयकोनायकसकलात्माकहियइ इसोकेवलीसंसारकुतीर्णलोसकलसिद्ध अरहंतकहियइ तेहनइ
नमस्कारकरुंहुं॥ २॥ श्रुतेनलिंगेनयथात्मशक्तिसमाहितांतःकरणेनसम्यक॥ समीक्ष्यकैवल्यसुखस्पृ
हाणां विविक्तमात्मानमथाभिधास्ये॥ ३॥ ॥अर्थ॥ ॥श्रुतकेवलीश्रीगणधरदेवतेहनीवानी
श्रुतकहियइ सिद्धांतकहियइ॥ तेहनइबलइ॥ आधारइलिंगकहतां अरूपीसुषपिंड॥ तेहनो अनुभवज्ञान ॥८॥
पनो अरूपीसुखपिंडकिमजानियइ जीश्रीगुरु॥ आत्माहगुरु॥ उपशमदृष्टि क्षायिकदृष्टि क्षयोपशम
दृष्टि॥ इसीसम्यग्दृष्टिभवजीवकीप्रगटहोइ॥ नवआत्मस्वरूपकोअनुभवइ॥ मिथ्यात्व॥ १॥ प्रथमामिथ्या

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनंतमहिमातेरी ॥ इंद्रीपाचनतेंतेहनइसंगइनूतकाइहोइ ॥ रेजडजीव ॥ देखोनिर्मलाई ॥ जीवकीमलि
नमहाअपवित्रशरीरकइसंगइरहतोइनिर्मलपवित्रशरीरके ॥ इसंगइरहतोइ ॥ निर्मलपवित्रदीसइ ॥ केईश्री
गुरो ॥ केईएकजीवकुंजडकहइ ॥ केइएकजीवकुंसर्वगतकहइ केईएकजीयकुंशरीरसमानकहइ ॥ केईएक
जीवकुंसून्यकहइ इसिमतइ ॥ जीनेहनोस्वरूपजीवजडकिमकहियइ ॥ अत्राहयुरू: ॥ आपणइस्वरूपइश
तोवाहिरोविकारकाइनजाणइ ॥ इंद्रियप्रपंचनास्वादनजाणइ ॥ तिणिकारणिजडकहियइ बाहिरीचतुरा
ईवेगलो ॥ कर्मकलंकनोजनवसपहोइ ॥ नवनिर्मलस्वांनज्ञानप्रकाशइकरी ॥ सर्वजगत्रयसमायइ ॥ सर्व
जगत्रयकाप्रपंचजाणइ ॥ तिनिकारणि ॥ जीवसर्वगतकहियइ ॥ अनेकशरीरलीधाछोड्याइणीजीवइअनइ
दाहिलोशरीरमनुष्यगतिनो ॥ वज्रऋषभनाराचसंहनन ॥ जिनीशरीरइ ॥ पयाख्यातचारित्रपलस्सुक्लध्यानइ
प्रसंअराधीनइ ॥ केवलअनंतचतुष्टयप्रकटहोइ ॥ तेचरमशरीरकहियइ ढेहिलोतिहसमानतेथीकिंचितनू
न ॥ जीवमुक्तिपुहचइ ॥ अनंतकालतेतलोइशरीरसमानकिंचितनूनरहइतिणिकारणि ॥ सरीरसमानकहि
यइ ॥ ज्ञानावरणादिकर्मकोसून्य ॥ निर्विकारभावपरभावकुंतीचेगानो ॥ एकलोचेतनमजीवसून्यकहि
यइ ॥ इसोअनंतगुणभंडारआत्मा आपणोजिणइउलख्यो आपहीपासितेहनइनमस्कारकरु ॥ [illegible] ॥ अनं
तचतुष्टयकानाथकुंसिद्धस्वभावकुं ॥ आपणासुखभंडारकुं ॥ अनंतबोधिवीजकादातार ॥ श्रीगुरुकुंवांदु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

॥समा०॥ विवहारमानइ॥ साचौसंयम॥ पंचमहाव्रत॥ पांचसुमिति॥ ५॥ विवहारसंयमरूपमनुगुप्ति॥ १॥ वचनु
॥८॥ गुप्ति॥ २॥ कायगुप्ति॥ ३॥ विवहारइपालइ॥ जिनसूत्रभनइ॥ विवहारसामायिककरहइ॥ मुक्तिलभ्य
होइ॥ संकलनकइउदयकृती॥ द्रव्यभ्रमताभावइकरी॥ विवहारद्रुवाहिरीदृष्टिवीतरागदीसइ॥ सु
निनिरावाधसमताभावइसमानजानइ॥ संजमकइबलइवनवमाग्रैवेकलगइपुंहचइ॥ तोइसिहजमुक्
आपणेोस्व॥ भावअज्ञानतोमिथ्यालीकहियइ॥ बाहिरएभावतिहांविश्वासकरइइंद्रियविकारविष
यतेहीसुषजाणइ॥ इंद्रीविकारकृतीविगलो॥ निर्विकारकेवलस्वभावआपनपोनजानइ॥ तेजघन्य
प्रकृतिमिथ्यालीकहियइ॥ बाहिरैविवहारसाचोतेहनेनिश्चैकरिजाणइ॥ आसस्वभावकंनजान
इ॥ जघन्यप्रकृतिमिथ्यालीतेकहियइ॥ ३॥ अनंतानवंधीक्रोध॥ १॥ मान॥ २॥ माया॥ ३॥ लोभ॥ ४॥ कि
मजाणियइजीश्रीगुरो॥ मोहमदिरएमातोकेवलस्वभावआयना॥ आसास्वभावकंअजानतोमह
रौद्रस्वभावीजीवक्रोधकरइ॥ आपणसरीषाजीवविरोधतोदपानकरइ॥ कोमलपरिणामनक ॥८॥
रइ॥ सदानाखिकमनरुचिकरइ॥ कामभोगकीतृष्णावर्णीहोइ॥ हिंसाधर्मभावइ॥ हिंसकीजीवदे
षीसुषपामइ॥ संयमीरयावंतजीवदेषीदुषमान॥ इपरलोकनमानइजीववपराधेकीसहहरणन
करइ॥ तेअनंतानवंधीकहियइक्रोधअनाहिकालकेो॥ कलंकजीवपराधकंअनंतसंसारलाव

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्रिंकोलोपनिविकारयरखीकोधनीतेहनीऋपकीत्रिंनहोइ॥ एवंनय॥१॥ नहोइ॥२॥ द्वेषवैरभावनहोइ॥ चउरासी
लाषजीवजातिकापीडरुऊ॥४॥ रागप्रेमकऊनहोऊपरिनहोइ रागद्वेषरहितजगन्नाथतेहकुंनमुंकरइ॥५॥ मो
हभ्रांतिपरीटी॥ परस्वभावकेविषैवि॥ भ्यासविलयगयो॥६॥ चिंतानहीस्वाधीनकुं॥ पराधीनपनोसपगयो॥
७॥ जरानहोइचरमशरीरकुंवरोगनहोइपुण्यप्रकृतिकाधनीकुं॥८॥ मरणनहोइकेवलीकुंआगइभवन॥
होइ॥९॥ प्रस्वेदनहोइ॥१०॥ खेदश्रमनहोइअनंतवलवीर्यकाधनीकुं॥११॥ मदआठजातिमदमानपुसके
गर्वनहोइ॥१॥ कुलमदनहोइसंपदाकोगर्वनहोइ॥ रूपजोवनकोगर्वनहोइ॥ ज्ञानकोमाननहोइ॥ तपसंयम
कोगर्वनहोइवलवीर्यकोमानगर्वनहोइ॥ विज्ञानकलाकोगर्वनहोइ॥ एवंमदवीतरागकुंनहोइ॥१३॥ रतिसं
सारकासुखकीरुचिनहोइ॥१४॥ विस्मयकांईअपूर्वआश्चर्यसर्वज्ञकुंनहोइ॥१५॥ वलीगर्भवासनहोइ
१६॥ निद्रानहोइजागृताकै॥१७॥ विषादनहोइधीरकुं॥१८॥ उक्तंचक्षुधा॥१॥ तृषा॥२॥ भय॥३॥ द्वेषा॥४॥ रा
गोमोहश्च॥५॥ चिंतनं॥६॥ जरा॥७॥ रुजा॥८॥ च॥ मृत्युश्च॥९॥ स्वेद:॥१०॥ खेदो॥११॥ मदो॥१२॥ रति॥१३॥ विस्मयो
१४॥ जननं॥१५॥ निद्रा॥१६॥ विषादो॥१७॥ष्टादशाध्रुवा॥१८॥ त्रिजगत्सर्वभूतानांदोषा:साधारणाइमेएतेर्दो
षैर्विनिर्मुक्त:सोयमाप्तोनिरंजन:॥ विद्यंतेयेषुतेनित्यंतेत्रसंसारिण:स्मृता:एवंअठारहदोषकरीवर्जितो
केवलीकहियइ॥ तेहनइअनुभयभाषाहोइ॥ जोजनगामिनी॥ सुखापिंडकाआवरणछूटइ॥ जवतवअ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥सम॰॥ तोषमानइसर्वसंसारकाविषयसुखपंपजइ। तोइसंतोषनपामइ। परलोकइ। आगलइनविसरीनइ
॥१०॥ उषयामिसुं। इसौविवेकनऊपजइ। तेअनंतानवंधीलोभकहियइजीवनरकनिगोदगनिकौकारण
७ इसीअनंतानवंधीचौकडीजीवकुंनरकनिमोहइलेजाइ। सम्यक्तप्रकृतिमिथ्यात्व ३ चौथैगु
णठाणैतेलसातमेलगेउदयहोइ ४ अनंतानवंधीक्रोध ४ मान ५ माया ६ लोभ ७ एहीसा
तप्रकृतिजवंउपशमइ। तवजीवकुंउपशमसम्यग्दर्शनऊपजइ। अनादिकालकोरसतोजागइ। अ
नवारकौआतमज्ञानरसचाखइ। उपशमसम्यग्दृष्टीकहियइ। अनइएहीसातप्रकृतिजवक्षयजा
इ। तवक्षायिकसम्यग्दर्शनऊपजइ। ग्राम्यतो। मिथ्यात्वसमयमिथ्यात्व। अनंतानवंधीच्यारिए ४
उपशमइ। तववेदकसम्यक्त। कहियइ। सम्यक्तप्रकृतिकउदय। प्रकृतिवकइउपशमइ। सातमी
सम्यक्तप्रकृतिसाचा।विवहारकीरुचिपेमतेसम्यक्तप्रकृतिकहियइ। तेहनइउदयवेदकसम्यग्दर्श
नकहियइ। आत्माकोज्ञानपणौलिंगकहियइ। तेहनइउदयवेदकसम्यग्दर्शनकहियइ। आत्मा
कोजानपणौलिंगकहियइ। तेहनइवलइआधारइकरीनइ। जिसौमेरीज्ञानज्ञाकि। तुइतरमसुखकी ॥१०॥
तिनइकरीनइ। कार्यसुतकौवलकार्य। आपनोअनुभवकौवलइइजिसौ। तिसइवलइकरीनइ। जेम
सजीवसहजसुखकालालचीआसक्तानकीबांधाइकइवइ। तेहनइविवक्तप्रकरसाहिलो। सुख

श्री गणेशाय नमः सिद्धश्री

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्व ॥ २ ॥ जघन्यप्रकृतिमिथ्यात्व ३ अनंतानुबंधीक्रोध ४ मान ५ माया ६ लोभ ७ ॥ एनी सात प्र
कृति दर्शनमोहनी कहियइ ॥ तत्वदृष्टिकुं मोहइ ॥ आवरइ ॥ मिथ्यात्वसंज्ञ कहियइ जी श्रीगुरु ॥ पुत्रमित्रक
लत्रधनधान्यसंपदा एतौ ॥ स्पर्शरसगंधरूपशब्द ॥ तेहना विकार भावना अनभावना नानाप्रकार ति
हारूपनो मिथ्यामतिमातो ॥ सहज अशुद्ध अनादि अनंत सुखसत्ता अवबोध चेतनस्वभाव आपणे पान
जानइ ॥ कुनही मार्गकी रुचि प्रतीति विश्वास न ऊपजइ ते मिथ्यात्व कहियइ जीव ॥ अनादिकालकी
निद्रा ॥ तेरा दर्शन ज्ञान लीधन को आवरण ॥ २ ॥ मध्यम मिथ्यात्व वी जो किम जानियइ श्रीगुरु ॥ मध्य
म मिथ्यात्वि ते कहियइ ॥ जे कुराही एक कामार्ग कुलाचार कुलदेव कुगुरु ते हनी प्रतीति करइ ॥ विसा
समानइ ॥ ए मार्गइ सो देव एही गुरु मुझकुं आराधतां मुक्ति देस्यइ ॥ एही मार्ग साचो ॥ केई इसो मार्ग
मानइ छइ ॥ सृष्टिकर्ता कोई एक पुरुष छइ तिनइ तिनइ स्वर्गमृत्युपातालनी पूजा भा ॥ जीवादिक प
दार्थनी यज्ञा भा ॥ इसो कर्ता [illegible] ॥ इसी रुचि प्रतीति मध्यम मिथ्यात्वी करइ ॥ तपसयम पाल
इ ॥ अज्ञानकष्ट करइ ॥ साचो जीवादिक पदार्थनो विवेक न जानइ ॥ साचा धिवहार साचो देव वीतरा
ग साचो साधु गुरु ॥ साचो दयाधर्म ॥ ए विवहार कहियइ तिहां संतोष न पामइ ते मध्यम मिथ्यात्वी
कहियइ ॥ ३ ॥ जघन्यप्रकृति मिथ्यात्व किम जानियइ जी श्रीगुरु ॥ जघन्यप्रकृति मिथ्यात्वी ॥ साचो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥समा०॥ ग्रंतरकासंबंध। तिहारातोस्तोअतिमोलयनइजरामरणअग्निलागीछै। कायाकासिरइघरितिहारा
॥२१६॥ तोजीवकुटंबीकिमजागइ। जइश्रीगुरुजगावै। सावधानव्हकोरे। तोतेजीवश्रापनीमोहनिद्राछोडी
नइ। आत्मशक्तिसंभालीनइशरीरादिविकाररूतीउदासकिमहोइ। हितार्थस्वरातारजइगुरुनहो
इ। तिनिकारणिपिवहारज्ञापिगुरुशिष्यसंबंधसेवो। ८७। इतीदंभावयेन्नित्यमवाचांगोचरंपदं।
स्वतएवतदाप्नोतियतोनावर्ततेपुनः। ८८। इनीप्रकारइआपनोज्ञानपदवचनइकरीकहोनजा
इ। अवाच्यगोचरछेरोइ। शाखातीतअसंसवेप्रपंचव्यकाररूतीवेगलोभावनो। शुभाशुभप्रपंचनानाप्र
कारअनइ। प्रपंचनाविभेदअनेरदेषनहाररामतुं। अरूपीचिदानंदआतितुप्रपंचरूतीवेगलोभाव
तां। आपनीरीझिज्ञानगुणकीचेतनासावधानी। तेहीलक्षणगुणेछे। अरूपीजेहनइतेअरूपीयरा
परूपणावडीरूतीवेगलो। सावधानपणाइदेषतोविचारतांस्मरतांध्यानकरतांस्वयमेव। आत्म
लखियामिस्ये। जिमकाष्टरूतीअग्निकोनेजइबाहिरीनीकले। एकवारतोवलीकाष्टिमाहिनसमा ॥२१६॥
वइतिमजइ। एकवारशरीरकोसंबंधछोडीनइ। वेगलोहोइ। तोवलीशरीरखत्रइजीवअवतारन
पामइ। जोनिश्चकूरीनमूके। जइआत्मज्ञानविकाररूतीवेगलोभावइ। ८९। अयत्नसाध्यंनिर्वाणं
चित्तत्वंभूतजंयदि। अन्यथायोगतस्तस्मान्नदुःखंयोगिनांक्वचित्। ९०। हेजीवभूतइंद्रीविका

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इ हंसतै क्रोध न करनो ४ । अनइ अनंतानवंधी मान तिकहि पइछइ । मिथ्यात्वइ रातो मानी । विवेक रहित
मामेरु जिवडा जे लोक माहि पूज्य महिमा का धनी तेहनो । अविनय करइ तेहनी महिमा लोयतो संका न
करइ । अविवेकी जीव कीगे विभावइ । पाप करतउ भय न करइ जाति १ । कुल १ । संपदा १ । रूप १ । जो
वन १ । विज्ञान कला १ । वल वीर्य को मान गर्व करइ अनेरा जीव कउ त्रिणा करी जाणइ । निःशंक नास्ति
क मती । महादुष्ट भावइ वर्तइ । इसो मान अनंतानवंधी कपइ ५ । सहज सुख की रुचि वेगलो । मिथ्या
दृष्टी माया करइ अनेक प्रकारइ माया केवलइ । प्रपंच घणा जानइ अति मधुर मीठा बोल बोलीनइ लोक कई
विश्वास उपजावइ । मन माहि महाकुटिल । नो लालो के कंवचइ पाप को भय न करइ माया प्रपंच करतो
सुष मानइ । सरीव च कुभावई अेइ । संयमी आजेव सुभावी भवजी वेरषीनइ सुष न पामइ । मन
माहि मुबइ । धरइ मायावी मुह मीठो वाहिरो आपनो दुष्ट सुभाव न जनावइ । इसी माया अनंतानवं
धी कहियइ । इह लोकइ अपकीर्ति दीइ मायावी पुरुष की मरीनइ दुर्गति जाइ ६ । अनंतानवधी लोभ
किम जानियइ जी श्री गुरो । स्पर्श १ । रस १ । गंध १ । रूप १ । शब्द १ । ७ । ए पांच इंद्रिय का विषय आ
हार कहियइ तिहा अति लोभ करइ । विषय विकार भोगवतो संतोष न पामइ सावद्य सपाप विष
य सुख भोगवतो शंका न करइ । नाम्बन्तो स्वभाव आत्मरस न जानइ । पाइ लक्ष्मी हरतो अति । सं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

॥समा०॥ न्नश्रोत्रबुद्धि ७ ॥ दूरास्वादनबुद्धि ॥ ८ स्पर्शबुद्धि ९ ॥ दर्शबुद्धि १० ॥ घ्राणबुद्धि ॥ ११ ॥ श्रवणासमर्थताबुद्धि १२
॥११३॥ दशपूर्वबुद्धि १३ ॥ चतुर्दशपूर्वबुद्धि १४ ॥ अष्टांगमहानिमित्तबुद्धि १५ ॥ प्रज्ञाश्रवणबुद्धि १६ ॥ प्रत्ये
कबुद्धि ॥ १७ ॥ वादित्वबुद्धि १८ ॥ एवं अष्टादशबुद्धि ॥ प्रत्येक कहियइ छइ ॥ तिहां प्रथम केवलज्ञा
नत कहियै ॥ जीव अजीवनी ज्ञानइ द्रव्य ॥ १ ॥ क्षेत्र २ काल ३ भाव ४ इंद्रीविकारभाव ५ ॥ विधिकर्मप्रपं
च ६ ॥ जे पाछइ थी ता जीव कर्म अनइ सो अनंत वर्तै छै ते भाव ॥ अनइ आगइ नी पजिस्यइ ॥ जे भाव प्रपंच ते
हनो इम गुण पर्याय सर्व एक इ समय ज्ञानइ ॥ ते केवलालब्धि रिद्धि कहियै १ ॥ अनइ बीजी रिद्धि ते क
हियै ॥ जे मूर्त्ती द्रव्य ॥ १ ॥ क्षेत्र २ काल ३ भाव ४ प्रत्येक इ जाणइ ॥ तेहनो प्रमाण गुण जानइ ॥ ते अव
धिज्ञान कहियै ॥ तिहना भेद दोनि ॥ प्रथम देशावधि ॥ दूजो अवधिज्ञान रिद्धि ते देशावधि कहियै ॥ रूपी
द्रव्य विका जानइ अनइ बीजो अवधिज्ञान रिद्धि सर्वावधि कहियै ॥ त्रसनाडी राजू चौदह कहियइ ल
म्बी अनइ एक राजू के विस्तार इ त्रसनाडी कहियै ॥ जिहां बेइंद्रियादि त्रसजीव वर्तै सुख दुःख विकार इ ॥११३॥
गता ॥ नारकी ॥ १ ॥ तिर्यंच २ मनुष्य ३ देव ४ त्रसजीव तेहनो क्षेत्र त्रसनाडी कहियै ॥ तिहां ना रूपी
द्रव्य विकार सर्व जाणइ रूप पर्याय नाम सहज गुण अवधिज्ञान को ॥ २ ॥ अढाईद्वीप मनुष्यक्षेत्र पंच
तालीस लाख योजन प्रमाण ॥ ४५००००० ॥ होइ ॥ तिहां ना रूपी भाव अनइ मनो विकार सूक्ष्म प्र

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माहिलूनतिहांनोउपष्यमुसाटजइचाषइ।तोईएकलोहंस।मेरोतुमसंसंबंधहूवो॥हेश्रीगुरु॥॥
जइगुरुशिष्यसंबंधसाचोहोइतोएकइकालइसुखदुःखस्वर्गमोक्षजीवनमरणपुण्यपापतेह
नाफलसुभासुभसाथिभोगवतांगुरुचेलाजइप्रेमसाचोहोइगुरुचेलानोतेतोदीसइनही॥सुखदुः
खसुंसामेतोकिसोजीवसंबंधगुरुचेलाको॥गुरुस्वर्गइसुखलीलाभोगवइअनइचेलोनरकइ
दुःखपुरंपराभोगवइ॥आयुगइबलइवीर्यइआपणोआत्मरससेवीनइपरमसिद्धिपरपामइ
आपणइरसरस्वादइआयनोज्ञानरसचाषतोशरीरथकीवेगलोहोइजिमकाष्टकूतीवेगलोअ
ग्निकोतेज॥अत्राहगुरुः॥हेमनः॥ ॥गुरुशिष्यसंबंधसाचो।जइगुरुशिष्यसंबंधसाचोनहोइतो
विनयमागलोपथ्याइ॥विवहारगुरु॥अरहंत॥१॥सिद्ध॥२॥आचार्य॥३॥उपाध्याय॥४॥साधुगुरु॥
५॥तेहनोविपायस्वंगेहोइसाचोनहोइ॥गुरुशिष्यसंबंधतोवेदस्मृतसिद्धांतनोअमसवेपूर्वोहोइ॥ज
इगुरुशिष्यसंबंधनहोइ॥जिमघृतइअमइकरीथ्याकोकूंटवीसतोघरमाहिअसावधानपनइअ
नइघरलागोअग्निअसवधानस्तोऊंटवी॥तिहांजइकोईजग्यावइनहीसावधानकरइतोतेस्तोाइ
वलइ॥तिममोहनिद्राइसूतोजीवकूंटवीअनादिकालनभमइ॥तोपाकोप्रमइकरीषित्रखेटूंईहं
संकूंटवीकायरघरिमोघरतिहांसूतोछेसम्ांतरशतोअमइनलोपुत्रकलत्रादिबाहिरविकार॥स

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥समा०॥ कोस्तौ जागिसे ॥ जीव जइ मछर नाव छोडी नइ ॥ पर भाव छोडी नइ जइ समाधितंत्र सूत्र नो
॥१३२॥ अर्थ रिषिये तौ अनचारैमार सं आपनो चाषिये ॥ तिणि कारणि अनेराई जे भव्य साधु लोक ते हन्नु
इ कहिये छै ॥ क्षिमा भाव अवलंबीनइ ॥ आपनो हित चिंतवीनइ समाधितंत्र सूत्र नो अर्थ घेर
षि ॥ श्री कुंदकुंदाचार्य श्री गुरु मेरै ते हनी वानी सुनीनइ मेरो भ्रम फीटो आपनो रस मेदी ।
गे ॥ श्री कुंदकुंदाचार्य श्री गुरु नी वानी ॥ मेरै अज्ञानदाह बुझावनकुं एही पानी ॥ एही वानी
सूत्र एही उपदेश विधि श्री कुंदाचार्य कै हितोपदेश ज्ञान मार्ग मुझ कुं शरण छै ॥ संसार माहि
मुझ कुं आपनो गुरु छोडीनै ॥ बीजे स्थानक प्रेम न ऊपजइ अनेरो जे कोई आपना श्री गुरु का
मार्ग सेविस्यै ते हना वचन कौ विश्वास करिस्यै ते भव्य जीव आपनो सुख भंडार ली लाइया
मिस्यै ॥ १०४ ॥ सद्बोधिसागर विवर्द्धन चंद्रमूर्त्तिः श्री शैलशीतलगुणामलवाक्सरस्मिः ॥
संसार नीरुह जनैक रवबोधनार्घ मर्थोदय सुकृतधीः ॥ कृतमान् समाधौ ॥ १ ॥ इति पर्वेन ॥१३२॥
धर्मार्थी कृतबालबोध समाधितंत्र सूत्र न प्रतिबोधनाधिकार बालरस प्रकाश धर्माधिका
र समाप्तः ॥ याद्दृशं पुस्तकं दृष्ट्वा ताद्दृशं लिषितं मया ॥ यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोसो न दीयते

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रविषयरसतिहाथकीचेतनमपिंडजूपोरेषिसइ।तोतुझकंनिर्वाणमरयतलपषइहोइस्पइ।जोगविका
रसवेलोडीनइ।जोगम्परीनइआपनइरसइरातोदाहिरेस्तोजोगीजागइ।विषयाविकारथकीना
गोरीसेछे।जोगीध्यानइरातो।धीरचित्तनेहनइ।पत्रंपरवाइनिर्वाणहोइ।काहिरेविवहारक्रियाइस
तोतेहनइफलपयरमुक्तिपरहोइ।अनइनिरीहसंयमीकुंऊदासजोगीकुंनिर्ग्रंथव्रतधारीकुंसंसा
रसंपदातेहीदासीसरीषीलीलंचिकरइ।इरिकेदेवतेहनीसंयमलब्धिरेखीनइ।आपनीसंपदानि
रइ।तेसंपदातेसंयमलब्धिकेहीजीश्रीगुरुजेसंयमपालतांउपजइ।विवरीनइकहियइश्रीगुरो॥
आदगुरुः॥संयमरमूरोदिगंबरउपरामनावइरातोनिवइएतोनिर्ग्रंथव्रतधारीनिरासोइंद्रीकोरस
नहार।तयाधनरयानरुखीतरागतेहनइजेसंयमलब्धिऊपजइ।तेकहियेछे।जीवतुहकंमूलर
ब्धियोगीकुंआवहोइ।प्रथमबुद्धिरिद्धि१बीजीक्रियारुद्धि२त्रीजीविक्रियारुद्धि३चोथीतपो
रुद्धि४पांचमीबलरुद्धि५छठीउषधरिद्धि६सातमीरसरुद्धि७आठमीखेत्ररिद्धि८एवंमू
लरिद्धिआठतिहांप्रथमबुद्धिरुद्धिकहियेछे।जीवसंयमललब्धिकोफलबुद्धिकरतांअवगमज्ञान
कहियेतेबुद्धिरुकहिये॥तेहनानेअठारहभेदछे॥तेप्रसेकइकहियेछे॥यथाकेवलबुद्धिरिद्धि१अ
वधिबुद्धिरद्धि२मनःपर्ययबुद्धिरिद्धि३बीजबुद्धि४कोष्टबुद्धि५पादानुसारिणीबुद्धि६संभि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥सम०॥ रोगपीडाहूरिकरैतेमल्लौषधीलब्धिकहिये॥४पांचमीविडौषधीरिधितेकहियेजेविटउच्चार॥मूत्र
॥१२७॥ साधुकाशरीरमलसर्वदुस्साध्यरोगऊं छयकरे तेविडौषधीलब्धिकहिये॥५छठीसर्वौषधीलब्धि
तेकहिये॥जेअंगोपांगशरीरनाजिहालागइ॥तिहानाअनेकदुःखकारीरोगविकारउपजाइ॥केवलनषारि
अनेएईविकारसाधुनाशरीरनाजिहालागे॥तिहासर्वरोगविलयजाइ॥तेसर्वौषधीलब्धिकहिये॥६
सातमीआशीविषलब्धितेकहिये॥जेविषसहितआहारकोईसाधुकुंदेयइ॥तोतेआहारसाधुकोअ
मृतहोइउपतिष्ठइ॥अनइविषकेरीमूर्छीनाजीवसाधुकावचनसुननांपमाणनिर्विषहोइ॥तेआसी
विषतपोलब्धिकाधनीसाधुकहिये॥८॥आठमीदृष्टिविषलब्धितेकहिये॥जेसाधुकीदृष्टिजिहाला
गेपसेरेतिहालगिविषवेदनायीआजीवनकालनिर्विषहोइतेदृष्टिविषलब्धिकहिये॥अथवाजइको
पइकरीनइदृष्टिविषलब्धिकोधनीसाधुदेषेतोजेताजीवदृष्टिआगेछेतेनामरणकंपामइ॥अनइए
पानावइकरीजीवणनिऊंसाधुदेषेतोतेनकालतेविषइकरीमूर्छीनाजीवजीवे॥कोपइकरीनइसाधु ॥१२७॥
जइअन्नपानीदेषेतोतेपानीअमृतसर्वेविषहोइअनइजइदयापरिणामइअन्नपानीसाधुदेषे॥तोस
विषअन्नपानीनिर्विषहोइ॥दृष्टिविषीसाधुकोविषमहाविषमदेखतेहीसहीनसके॥६॥सातमीरस
रिद्धितेहनाभेद॥६॥तेकहियेछे॥आस्यविषादृष्टिविषा॥२क्षीरस्रावी॥३मधुस्रावी॥४सर्पिस्रावी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दी । केईएकइसोमानइमुक्तिदाता एकविष्णु । अनपरखइनृत्तिनहोइ । अनइविष्णुपषइमुक्तिनही
केईएकसुदायमानेजगत्रयकोसिरजनहारहर्त्ताकर्त्ता । इणीपरि आपनाआपनापखपातकाग
ही इमबोलइ अनइ आपनाश्रीगुरुकीक्रिपाईकरीनइजेमेदेवदेख्यो । तिनीदिखइसर्वदेवदेख्या
सर्वदेवकोआदिसुखपिंडदेवदेष्यो । आपनहीआपनपासि । श्रीगुरुकइसंदेसइ । उपशमसरो
वरमेलाधोअज्ञानदाहमेरोफीटो । आपनाश्रीगुरुकइउपदेसरसायनइकरीनइ । मिथ्यामददा
हफीटोमेरोसुखगाढुडोमेलाधो । आपणहीपासिश्रीगुरुजीनेइसंदेसइ । चउरासीलाषजो
निआमतेहनाशुभाशुभविकारतेहनोकत्तारमेदेष्यो । आपनपासि । मएश्रीगुरुकेसंदेसइसि
द्धषेत्रमेदेष्या । आपनपासिअमूर्त्तोमूर्त्तिमेजुहारी । उपशमजलइपखालीनइभावफूलइम
इपूजी । दर्सनदीवोअजुआलीनइ । आत्तीउताऐआपणासुखपिंडदेवकंमइसिद्धखेत्रइजाई
नइआनंदधोवती । पहिरीनइपूजाकीधी । श्रीगुरुकेउपदेसइदेखोदेखोसमाधितंत्रमहामोटो
उदयाचलपर्वततिहांअर्धोदयचंद्रउगो त्यासुखशीतलसुहावनो । उजलीअर्घजोत्या
हीसेछै । जन्मजमरणदाहउपसमइजइ तिनीअर्घजोत्याइ आपनोसुखशीतल
कीजइजइसमाधितंत्रस्त्रनोअर्घजीवतु । विचारिसे । तोआसविधितंजानिसे । आनादि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥समा०॥ थितेकहियै ।जेमावेतिसोआहारसाधुकाहाथकउपरिआयोअम्रतहोइअनइ ।सर्प्पिदृष्टिजीवरोगयीडि
॥१२८॥ तजीवंनिर्विषहोइ ।नीरोगहोइ ।साधुकावचनसुनीनइतेअम्रतआविणीलब्धिकहियै ७ ॥आवमीखेत्र
ऋद्धितेहनाभेदहोनि ॥ एकअखीणमहानसीलब्धिअनइअखीणमहालयबीजीरिद्धि २ लाभांतराय
नामाकर्म्मकेउपशमइ ।साधुभिक्षाकुंभमतोअतुक्रमइऊणाहीएककेघरइपुहतौ तिहाआहारघोडो
छै ।एकविमनुष्यनेकारणि ।अन्नघरनइधनीकीधोछै ।तिहासाधुपुहतौतवतेआहारभक्तिकरिनइसा
धुकुंदेइतो जेकाईपाबेइजेषघोडोअन्नरहतौतेअन्नयानीतिनीदिवसइजइचक्रवर्त्ति ।तेहनोकटकसवेजी
मेतोतेई ।अन्नयानीखूटइनहीतिनिदिवसइ ।अनेकमधुरसारआम्लकटुककसायलाअनेकविधिआ
हारलीयजे ।अखीणमहाणसीलब्धिनेकहियै १ ।अनइबीजीलब्धिअखीणमहालयकहियै ।तेहनोस्व
रूपकहियैछै ।महालयकहियैभोजनशालासोई ।जिहाअन्नजीयजे ।तिहाहाथचारिसोइनौविस्ता
रछै ।जिहांजीमनहोइछै ।तिहांजइपुण्यकर्म्मकेतइपितयोधनभिक्षाकुंआवे ।तवतेभोजनशालासो ॥१२८॥
ईअनेकविधिअसनपानखादिमस्वादिमअनुपमसुहावनापुरिसकौशरसआहारदीसेजिहातन
योधनदिगंवरभिक्षाकुंगयोछै ।तेहनीमहिमातयलब्धिरिध्योवहारिहाथनीभोजनशालासोई ।ति
हासुर्णभोजनरूपानाभोजन ।तोभ्रभोजनअनेकरमइनीरतपूरितदीसे ।अनइचक्रवर्त्तिनोखंधा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गाइऊ नैरहइ ॥ च्यारिमासकाउसगइऊ नैरहै ॥ वरसदिनकाउसग्गइऊ नैरहै साधुनेकायवलीकहिये
निरालंबकाउसग्गइ साधुनीपरिरहै ॥ अनइ अमल्केराकोइनेऊपजे ॥ अनइजइ विकाखलइकरतोआ
पनीएकइचेटागुलीकरीनइ त्रिलोककंपावैविपरीतपनैस्थापेकायवलीसाधुनेकहिये ॥ ५ ॥ छठीऊ
षधीरिद्धितेहनानेहआवटतेकहियेछे ॥ ऊःसाध्यदुःखकारीआमपरोगतेहन्याविकारसर्वेविलयपा
मे ॥ सर्वौषधीलब्धितोसाधुनेहनइसंसर्गइ प्रथमआमस्पर्श ॥ १ ॥ खेलस्पर्श ॥ २ ॥ जल्लस्पर्श ॥ ३ ॥ मल्ल
स्पर्श ॥ ४ ॥ विट्स्पर्श ॥ ५ ॥ सर्वावयवस्पर्श ॥ ६ ॥ आस्यविष ॥ ७ ॥ दृष्टिविष ॥ ८ ॥ एवंमूलनेदआठ ॥ ॥ अनेक
इकहियेछे ॥ ॥ आमस्पर्शकहतांसाधुकाहाथपाउकोस्पर्श ॥ अथवाजिहासाधुवैसेछे ॥ तिहानीधू
लिनोस्पर्शतेधूलिस्पर्शतां ॥ अथवाहाथपाउस्पर्शतांसर्वरोगविलयजाइ ॥ तेआमस्पर्शसर्वौषधील
ब्धिकहिये ॥ १ ॥ षेलथंपारनोश्लेष्मथूकलालानाकनोश्लेष्मतेसर्वेजिहालागेतिहानाअनेकरोगविल
यजाइतेषेलोषधीलब्धिकहिये ॥ २ ॥ त्रीजीजल्लोषधीलब्धितेकहिये ॥ ॥ जेप्रस्वेदइकरीनइशरीर
इस्यमधूलिलागीछे ॥ तेजल्लकहियेतेजल्लजिहालागे ॥ तिहानाअनेकदुःप्रतीकाररोगविलयजा
इ ॥ तेजल्लोषधीलब्धिकहिये ॥ ३ ॥ चौथीमल्लोषधीरिद्धितेकहिये ॥ जेकर्णमल ॥ दांतनोमलनासिका
नोमल ॥ आंषिनोमल ॥ जिह्वानोमल ॥ एसर्वशरीरसंबंधीमलसाधुका ॥ अनेकरोगविकारगमावे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥समा०॥ परस्परइविरोधविलयपामै ॥ जिहाघोरगुणब्रह्मचारीनापसरैहै ॥ कलहकरणकीबुद्धिनऊपजे ॥ जिहाघोर
॥१२६॥ गुणब्रह्मचारीदिगंबररैहै ॥ मरणकोईनपामैनमइकइकरीनइ ॥ जिहाघोरगुणब्रह्मचारीस्थितिकरै ॥ चं
धनकोईनपामै ॥ रोगइकरीकोईनपीडिये ॥ जिहाघोरगुणब्रह्मचारीसाधुरहै ॥ घनोकालअखंडितब्रह्म
चर्यव्रतकोपालनहारसंयमीतिह ॥ नीमहिमाधकीसर्वजीवराशिकुंसंतोषसुखसोनारुपहोइ ॥ क्लेश
दुःखमरणरोगवैरभावपरस्परइसर्वजीवकुंनऊपजे ॥ तेघोरगुणब्रह्मचारीदिगंबरकहिये ॥ ४ ॥
पाचमीवलरिद्धितेकहियेहै ॥ ॥ वलरिधिनेहनाभेदत्रिणि ॥ मनोवलीसाधु ॥ १ ॥ वचनवलीसाधु ॥ २
कायवलीसधु ॥ ३ ॥ तिहामनोवलीतेकहिये ॥ जेश्रुतज्ञानावरणीकर्म्मनेहनोक्षयउपशमपामीनइद्वाद
शांगश्रुतनोअंतर्मुहूर्तमाहि ॥ सर्वेअर्थचिंतवे ॥ विरश्रमपणेतेमनोवलीसाधुकहिये ॥ १ मनोविकार
गहषविलयगयाजेहनो ॥ अनेइश्रुतज्ञानावरनीकर्म्मतेहनोक्षयउपशमभावछेजेहनै ॥ तेवचनवलीसाधुहो
इतेनइअंतर्मुहूर्तकालेइ ॥ सर्वश्रुतज्ञाननमननकीशक्तिहोइस्पष्टएकस्वरउच्चारइकरीइ ॥ अंतमुहूर्त्तकालइ ॥१२६॥
द्वादशांगसूत्रनणइआपणीलीलासुंअस्वरमात्रापदेस्वरव्यंजनसंधिसाचवतोसावधानपनइजन
इ ॥ मनतोकाई ॥ श्रमनऊपजइ ॥ कंठशोषनऊपजइतेवाग्वलीसंयमीकहिये ॥ २ ॥ जीजालब्धिकायानो
वीर्यवलतेकहियेहै ॥ प्रगटदीसैछै ॥ वीर्यांतरायकर्म्मनोक्षयउपशमसाधुकुंदेषोदेषो ॥ एकामासकाउस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५ । अमृतश्रावी ॥ ६ । एवं भेद छ होइ रसरिद्धिका ते असे कहिये छै । उत्कृष्ट तपोबली साधु जइ लोप इ
करी इ वचन बोले । मरि जानृं तौ तत्काल जिम विष खाधइ मरिये । जिम क्रोधवचन साधु का सुनन प्र
ण मरिये ते आशीविषा लब्धि कहिये । १ । वीजी दृष्टिविष लब्धि ते कहिये । जे उत्कृष्ट तपोवली साधु । क्रो
धइ करी नइ क्रूर दृष्टि जेहनै देषै ते जीव तत्काल जिम विषलहरी पीओ मरै । तिम संयमीनो क्रोधदृष्टि देष
त प्रमाण प्राण जाइ ते दृष्टिविषा लब्धि कहिये । २ । त्रीजी षीरश्राविणी लब्धि कहिये । जे विरस रूषो आ
हार साधु कर णहीए कइ दीधो ते ही आहार जब साधु के हाथि दीसै । तब षीर रसवत्ने कारी आहार होइ
अनइ वचन पिनि संयमीना षीणनुरीरी जीवकू पुष्टिकरै । वचनसुनतां रोगपीडा विलयजाइ । ते षीर
श्रावी साधु कहिये । ३ । चउथी मधुश्राविणी वृद्धि ते कहिये । जे कडू पो कसायलो नीरस आहार साधु
कुं दीधो होइ । अनइ जब हाथ ऊपरि ते आहार मुकिये । तब अतिमधुर सरस पुष्टिकारी ते आहार होइ ।
अनइ दुःखपीडित लोक ते हनइ साधु का वचन सुखकारी होइ । आर्ति आपदा सर्व विलयजाइ साधु का
वचनसुनतां तिम मधुश्राविणी लब्धि कहिये । ४ । पांचमी सर्पिश्राविणी लब्धि ते कहिये । जे रूषो आ अनुपा
नी पुट इ साधु कुं सरस होइ सघन मधुर पुष्टिकारी । मनोहर आहार होइ । अनइ षीण शरीरी प्राणी रो
ग पीडित तेहनै पुष्टि करै । साधु का वचन ते सर्पिश्राविणी लब्धि कहिये । ५ । छट्ठी अमृतश्राविणी ल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

॥सम्मा०॥ प्रथमभेदप्रतिसारि ॥१॥ बीजोभेदअनुसारि ॥२॥ बीजोभेदउभयसारि ॥३॥ बीजाक्षरकहियेरहस्यम
॥११८॥ र्मआम्नायउपदेशबीजाक्षरकहिये ॥ तेबीजाक्षरनथी जिनीसूत्रश्रुतइआम्नायउपदेसइतिपद ॥ ते
सूत्रउपदेशबीजाक्षररहितसुनीनइआपणइ ॥ विवेकइज्ञानइकरीनइजाणइ ॥ इणीपरइ ॥ इणी
सूत्रइ ॥ अथवाउपदेसइ ॥ इसौबीजाक्षरजोइ ॥ इसोजानइतेप्रतिसारयपदलब्धिकहिये ॥ परबीजकी
स्थितिजाणे ॥ तिहाएणयकृतजाणइतेप्रतिसारिपदलब्धिकहिये ॥ अनइबीजीअनइबीजीअनुसा
रिपदलब्धितेकहिये ॥ जेप्रथमबीजप्रथमश्लोकः ॥ गाथाश्चालावोसूत्रनोछे ॥ अनइआगिलोन
थीतेसूत्रअनइजे ॥ आपनाज्ञानकेवल ॥ इसोजाणइइणीसूत्रइएपदजोइये ॥ एहीअनुक्रमए
सूत्रनोइसोजाणइतेअनुसारिपदलब्धिकहिये ॥ सूत्रकौअनुक्रमजाणइ ॥ आगिलोअभिप्राय
जाणेसंपमीतेअनुसारिपदलब्धिकहिये ॥२॥ बीजोउभयसारिपदलब्धिनेकहियेजेसूत्रसिद्धा
न्तनांअधिकारअभिप्रायआगिलानथी ॥ अनइकेईएकअनुक्रमयाछिलानथीतिहाअनुक्रम ॥११८॥
जाणिअभिप्रायजाणे ॥ आगिलोपाछिलोक्रमनोअभिप्रायरहस्यजाणइ ॥ एकसूत्रसर्वेग्रंथजा
णै ॥ तेउभयसारिपदलब्धिकहिये ॥४॥ सातमीसंभिन्नश्रोत्रलब्धितेकहियै ॥ जेबारहजोजनलंबाइ
विस्तारअनइनवजोजनचोडाईनृमितिहाचक्रवर्त्तिकासेन्यकोउराय ॥ हस्तीघोडामनुष्यउंटगाई

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१ रस्सस ॥ २ पित्राच ॥ ४ ॥ ऐषइंकरीनइंउपसर्गकरै ॥ प्रेतवेतालझोटींगप्रमुखअनेकविकारस्वरूपदिखा
वीनइंतपञ्उपजावैकठोरवचनइंसाधुकुंपीडइउपद्रवकरै ॥ तेउपसर्गसाधुभावइकरीसहैतेघोर
तपोधनकहियै ॥ त्रिवाअश्रृगालीशनिऊंजयानकशब्दबोलइवाघसिंघहस्तीप्रमुखअनेकदुष्टजीवविवे
करहितसंयमीकुंउपसर्गकरैतोईधीरपनोअवलंबीनइसंयमीआतमस्वभावइलीनतेउपसर्गसहैतेघोर
तपोधनकहियै ॥ कायक्लेशकौसहनहारउष्णकालनानापसहै ॥ वर्षाकालनादंसमसकप्रमुखआबाध
सहै ॥ शीतकालनाशीतपरीषहसहैतेघोरतपऋषिनोधनीसंयमीकहियै ॥ ५ ॥ अनइछठोघोरपराक्रमी
साधुतेकहियै ॥ जेमनवचनकायजोगत्रिशिरमीनइअसमानपराक्रमीहूयोनेहनइजइविरोधियेतो
सर्वजगत्रयउलटपलटकरै ॥ जोगीआपणाइंद्रीदमकेवलइ ॥ जइक्रोधकरै ॥ घोरपराक्रमीसाधुतोप
थवीउलटीकरै ॥ समुद्रनापानीसूकइसाधुकीकोपाग्निकरीनइजगत्रयमाहिभ्रमभयऊपजै ॥ जइ
घोरतपरवीकोपकरै ॥ ६ ॥ सातमोसंवरीघोरगुणब्रह्मचारीकहियै ॥ अघवानामातरतेहनोअघोर
गुणब्रह्मचारीकहियै ॥ तेसाधुअघोरगुणब्रह्मचारीजगत्रपकाभयहरीकरै ॥ जगत्रयमाहिशांतिउ
पजावै ॥ पुष्टितुष्टिउपजावै ॥ आपनोशीलतपनिरतीचारपणाइपालतासाधुकुं ॥ सर्वजीवकुंहितक
रणसमर्थइहोइभूतप्रेतडाकिनीशाकिनीमारिकामनमोहनविकारसर्वविलयपामै ॥ दुर्भिक्षवैरभाव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ समा० ॥

॥ ११८ ॥ निर्ग्रंथ निरीह पनइ करीनइ क्लेश घनो सहै छै ॥ वीतराग कुं काई एक आग्या हम कुं देइ कृपा करीनइ इति री

दासी देव देषितु रूप भाव करितें ॥ तेरी आग्या वांछै छै देव देवांगना तेरा चरणा कमल सेवणा कुं अतिघ

णी लालचि करती वीनती वीनती करै छै ॥ जे कार्य तू कहे ते सर्व कार्य हम आयणा गुरु नो करिस्युं ॥ इ

सा स्त्रिनेक प्रभव वचन बोलती विद्यादेवी नोई तेन तपोधन आपणा आत्मरस इ रातो विवहार सेती

संसार सुख न वांछै ॥ अषंडित चारित्र नो धरणहार धीर संसार नी रू मोक्षपद को लोभी पुरुनो वइ नरा

चइ ॥ तिनी गुण इति दिगंबर विद्यानुवाद स्त्र मो पूर्व निर्विघ्न पनइ ज्ञ णइ ॥ ऐ हिणी प्रज्ञप्ती वज्र श्रृंखला

प्रमुख देवांगते हंगा नकि नाव दिषी मुनीनइ संसार सुख महिमा व्रतास प्रदान वांछै ॥ १३ ॥ चतुर्द्दश

पूर्व धारी श्रुतकेवली कहियै ॥ चउदमी लब्धि नो धणी ॥ १४ ॥ अष्टांग निमित्त लब्धि ते कहियै छै ॥ आंत

रिक्षं ॥ १ ॥ भौम ॥ २ ॥ अंग ॥ ३ ॥ स्वर ॥ ४ ॥ व्यंजन ॥ ५ ॥ लक्षण ॥ ६ ॥ छिन्न ॥ ७ ॥ स्वप्न ॥ ८ ॥ एवं आठ निमित्त ज्ञान

प्रसेक रूप कहियै छै ॥ प्रथम आंतरिक्ष निमित्त ज्ञान ते कहियै ॥ जे चंद्र मास पर्यंत ग्रह नक्षत्र नै हना ॥ ११८ ॥

उदय काल विचार ॥ अनइ असतकाल काल लक्षण चिह्न देषीनइ सुभ असुभ फल विकार जोने ॥ पूर्व ॥ १ ॥

पश्चिम ॥ २ ॥ उत्तर ॥ ३ ॥ दक्षिण ॥ ४ ॥ तिहां अभ्र पटल नो विशेष गुण देषीनइ सुभ फल अथवा असुभ

फल जाणे ॥ हानि वृद्धि जाणइ जय पराजय जाणे अतीत अनागत वर्त्तमान काल ते हनो सुभासुभ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

भउः खसुखरूपनैजानइ ॥ क्षयोपशमस्वरूपतैही होइ ॥ ३ ॥ चउथी बीजबुद्धि तेहनाें लक्षणगुणकहि
यें छै ॥ जिम खेत्र ऊंऊंटं बीयु खेडइ समारइ कोमल करइ ॥ अनेक श्रम करीनइ अति अपूर्व कोमल खेत्र
ऊंटं बीकेरे ॥ पछै तिमित्रकाल कौ सहाय पामीनइ ॥ मेहनी वृष्टि जवे होइ तवे ते खेत्र कोमल होइ ॥ तिहा
एक बीज ऊंटं बीवावइ तिनी खेत्रइ ॥ पछुइ अनेक प्रकारे बीज तिहां नीपजइ उत्तम खेत्र गुणइ करी
नइ तिम इंद्री मनोविकार दमीनइ ॥ उपशमजलधारइ करीनइ सिंचीओ हृदय सहजानंद खेत्र तिनी उप
शम खेत्रइ ॥ सो हं अनादि बीज लानइ ॥ गुरु उपदेसइ अथ मंत्र योगीनो इंद्री श्रुतावरणनै हनइ क्षयो
पशम रूपइ करीनइ निर्मल परिणामे इसाधु कुं एक अक्षर अथवा एक पद गुरु उपदेसइ ॥ तिहा ते अ
क्षर पद स्वपूर्वामीत पोधन अनेक प्रकार इ जानइ ॥ आपणइ निर्मल परिणाम केवल बुद्धि कहिये
४ ॥ पांचमी कोष्ठबुद्धि ते कहिये ॥ जिम कोठारी पुरुष अन्न कणकौ संग्रह करै ॥ अनेक प्रकारइ ॥ अन
इ जव जिसी जाति को धान्य कण बीज मांगिये ॥ कोठारी पासि तव जूया जूवा बीज देइ कोठारी ॥ ति
म विनयपूर्वक आपना गुरु पासि ॥ अनेक सिद्धांतसूत्र नानाप्रकार तेहना अर्थ विचार जे साधु त
पोधन अभ्यासा छै ॥ तेहनो अर्थ वली जव पूछिये ॥ तव अनेक प्रकारइ करीनइ शास्त्र अनर्थ अनर्थ
जूजूया कहै ॥ सावधानपनइ ते कोष्ठबुद्धि कहिये ॥ ५ ॥ छट्ठी पदानुसारिनी बुद्धि तेहनाें लक्षण

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥समा०॥ सनेस्वरराक्षसइमनुष्यइफाड्योत्रोड्योदेषीनइनिमित्तविचारइ॥ अथवाआसइकाटनोउंदिराववमुसलजी
॥१२०॥ वतिनीकाटनोछेद्योत्रोड्योवस्त्रदेषीनइजेनिमित्तविचारीयइ॥ तेहनेछिन्नविकारजाणिये॥ तेछिन्न
निमित्तज्ञानकहिये॥७॥ आठमोस्वप्ननिमित्तज्ञानतेकहिये॥ जेवातपित्तश्लेष्मादोषरहितस्वस्थपु
रिषपाछिलीरात्रि॥ तिहांअल्पथोडीनिद्रामांहिस्वप्नानइचंद्रमासूर्यदीसइ॥ अथवाअमिवि
स्तारसुंदरीसेपर्वततऊंचामनोहरदेषइसमुद्रतरताआपणकुंदेषइ॥ पर्वतउपरिआपणकुंदेषीनइ॥
पछइमजागे॥ समुद्रकुंदेषुंछुं॥ अनेकग्रामनगरसहितफलखेत्रअनइवाडीकुंदेषुंछुं॥ इसोस्व
प्नांतरजेदेषइ॥ तेशुभनिमित्तकहिये॥ अनइघृततेलइकरी॥ आपणकुंलिप्तदेषइ॥ अथवागर्द्दभ
ऊंटइस्वापनकुंचढ्योदेषइदसतोषेलतोदेषइ॥ इसोअशुभस्वप्न॥ अशुभनिमित्तदिखावइ॥ तेस्व
प्ननिमित्तकहिये॥ एवंआठनिमित्तज्ञानकहिये॥ शुभअनइअशुभभावजनावइ॥५॥१५॥ सोर
मोप्रज्ञाश्रवणलब्धिकहियेछे॥ प्रज्ञाश्रवणजेऋद्धितेकहिये॥ जेअतिसूक्ष्मजीवास्तित्वनोविचार ॥१२०॥
गहनश्रुतकेवलीकुंजेभावपूरइ॥ अनंतगुणद्रव्यपर्यायसहितभावसामान्यज्ञानीनजाने॥ तही
भावद्वादशांगश्रुतनराप्याप्रछेपरैछे॥ जेहनेश्रुतज्ञानावरणीकर्मकोउपशमपामीनइ॥ उत्कृ
ईछे॥ असाधारणअनुपमआसमाननीकरीवंनइविनयगपाणछेपजेहनो॥ तेयोगीप्रकृष्टप्रज्ञा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अप्रमुखतेहनाआठ ॥ अनेएईअचेतननाआठप्रकारसर्वेजोनेसुने ॥ जयाजयावारहनेजोजनप्रमा ॥
णभूमिजिहाचक्रवर्त्तिनोखंधावारकटकतेहना ॥ अनेकप्रकार ॥ कलकलाटशब्दजूयाजूयाजा
णेएईसरसवजइहाथऊतीगिरे ॥ तोनेहीनोसब्दसर्वआठसुणे ॥ नयलानकेवलइ ॥ अष्टकर्मद्रीनोवलन
बोधनऊंहोइतिणीगुणइकरीनइएकइकालइसर्वआठसुनेजाने ॥ तेसंभिन्नश्रोत्रलब्धिकहिये ॥ ७ ॥
अवमीहणसारनलब्धिनेकहियो ॥ जेनयकेवलइसयमीयामइरसनेंद्रीनोक्षयोपशमभाववलतिनी
वलइकरीनेसंयमीजेगविकारसुखऊतीवेगलोऊरसमाधुनवजोजनवेत्रऊतीकाईअधिकोक्षेत्र ॥
तिहानाअनेकरसविकारजूयाजानइतेहनोस्वादजाने ॥ अनइतिनहीप्रकारेंउधिकोपरिमलजान
इ ॥ स्पर्शजाणइरसजाणइरूपदेषइशब्दसुनइ ॥ स्पर्शरसगंधरूपशब्दतेहनाभावनीएणयएणइ
अनुभवेजानेतेहस्वादनलब्धि ॥ ८ ॥ स्पर्शस्वादलब्धि ॥ ९ ॥ घ्राणस्वादलब्धि ॥ १० ॥ रूपस्वादलब्धि ॥ ११
तेरमीलब्धिदसपूर्वधरणसामर्थ्यलब्धि ॥ १२ ॥ चउदमीरिद्धिचऊदइपूर्वधरणसामर्थ्यबुद्धिल ॥
ब्धिजिमऊपजइतेप्रकारकहियेछे ॥ जिनशासननकेदेवागनामाधुगुरुनेकचउदहपूर्वकीअधिष्ठा
ता ॥ आयणगुरुकीपरीक्षाकरइ ॥ रोहिणीप्रमुखविद्यादेवीपावतानभक्तिकीनिर्म्मलभावप्रका
शनीआगेरहीनइनमस्कारकरीनइ ॥ अनेकप्रकारगुणस्तुतिकरे ॥ प्रार्थनाकरे ॥ हेनाथस्यानंदार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ समा०॥ वालीनइ गुरुकाउयेइ आपखेसंयमीजइ दिगंबरमुद्राधरीनइ कंदर्प्पसर्प्पतेहनो महाविकार दर्प्प मोडियें तेनइ
॥ १२१॥ सेकबुद्धिलब्धिसंयंजो एमतुसङ्क॥ २७ ॥ अष्टास्वामीवादित्वलब्धितेकहियें॥ जेइंद्रादिकदेव॥ तत्वयरीसा
नइकारणि॥ अनेरामिथ्यामतइमाताउंचारी॥ तेहनामानमोडनकेकारणि॥ साधुसुजइवालस्ब्ध
लमाडइनोइतिदेवसाधुसुनपूरइऊतरदेईनसके॥ सोयरवादीमानमोडनसमर्थ॥ निगर्वेआपनइ
रसइरानोयोगीवादित्वलब्धिवंतकहियें॥ २८॥ प्रथमबुद्धिरिद्धिः संपतहेजीवतुअछंक्रियाऋद्धिना
भेदकहियेंछे॥ क्रियाऋद्धितेहनाभेददोनि॥ एकचारणक्रिया॥ १॥ वीजीआकाशगामीक्रिया॥ २॥ प्रथम
चारणक्रियावीजीआकाशगामीक्रिया॥ प्रथमचारणक्रियातेहनाभेदअनेक॥ एकजलचारणसाधु
कहियें॥ जलऊपरिचालेपणिअपकाईजीवनीविराधनानऊपजे॥ लब्धिकीमहिमागुणइकरीवइसचि
त्तनविराधाइ॥ तेजोगीजलचारणकहि॥ जिमभूमिऊपरिचालियेतिमपानीऊपरिचाले॥ १॥ वीजोजंघा
चारणदिगंबरकहियें॥ जेभूमिहुतीअंगुलीचारि ४ पाउआकाशइ॥ निरालंबरीरवइ जिमभूमिऊपरि ॥१२१॥
निःशंकपणइचालियें॥ तिमजंघाचारणसाधुभूमिथकीअंगुलिच्यारि॥ ४॥ निरालंबआकाशइपाउ
एषतोचाले॥ वायुनीपरिमेरवांमेरवमाहिजोजनकेताईएकसहअलीलाईजाइ॥ संयमधनकोधनी
दयामूर्तिजंघाचारणसाधु॥ २॥ त्रीजोतंतुचारणतयोधनकोलियामाकेऊिनातातंतूऊपरि॥ चालेपि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विकारजाणै ॥ संयमीतेअंतरिक्षनिमित्तज्ञानकहियै ॥ १ ॥ बीजोभोमनिमित्तज्ञानतेकहियै ॥ जेविरक्तस्वभावी
तायसउद्यानवाडीपर्वतनदीसरोवरप्रमुखअपंचतिहांनाभावलक्षणविचारीनइशुभअशुभफल
विचारइ ॥ स्निग्धरूक्षभावदेषीनइशुभअथवाअशुभनिमित्तविचारै ॥ अनइभूमिमाहिलारत्नसुवर्ण
रिजाणइ ॥ बाहिरइनिमित्तज्ञानइकरीनइतेभोमनिमित्तज्ञानकहियै ॥ २ ॥ त्रीजोअंगनिमित्तज्ञानतेकहियै
तिर्यंचअथवामनुष्यतेहनालक्षणअंगतिरमरुधिरप्रमुखधातुदेषीनइ ॥ जेनिमित्तउपजइतेअंगनिमि
त्तकहियै ॥ ३ ॥ पुरुषअथवास्त्रीनइस्त्रीनइकीनइ ॥ तेहनाशुभाशुभवचनसुणीनइ ॥ गर्दभपिंगलापंछी
उलूकपिवायसप्रमुखलीप्रमुखशब्दसुणीनइजेनिमित्तशुभाशुभविचारियेतेस्वरनिमित्तकहियै ॥
तिहांनाशुभाशुभफलजाणइ ॥ तेस्वरनिमित्तकहियै ॥ ४ ॥ पांचमउव्यंजननिमित्ततेकहियै ॥ जेमस्त
कमुखग्रीवा ॥ मुखशरीरनाअवयवतिहांतिलदीसै ॥ अथवामसादीसैकाईएकव्रणलांछनदीसै
तेतिलमसाव्र ॥ णप्रमुखशरीरइचिह्नदेषीनइजेनिमित्तशुभाशुभविचारियेतेव्यंजननिमित्तकहि
यै ॥ ५ ॥ छट्ठोलक्षणनिमित्ततेकहियै ॥ जेपाउहाथवक्षस्थलहृदयनिहांनालक्षण ॥ श्रीवत्स ॥ १ ॥ स्वस्ति
क ॥ २ ॥ भृंगार ॥ ३ ॥ कलश ॥ ४ ॥ वज्र ॥ ५ ॥ मघा ॥ ६ ॥ प्रमुखअनेकलक्षणदेषीनइजेनिमित्तविचारियै ॥ ते
लक्षणनिमित्तज्ञानकहियै ६ ॥ सातमोनिमित्तज्ञानतेकहियै ॥ जेवस्त्रशस्त्रछत्रआयनआसनदे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥सम्मा॥ षयरसइनिस्वादकसायलाकोमलफलकाचातेहाभोयलकरतोरिद्धिफलभोगवेचारएरिषीश्वर
॥१२२॥ जेयग्रासनइछइछौछैसाधुतोतिनहीश्रासनइचोलइ॥ आपणीलीलाइ॥ निर्विकार॥ अथवाजइ
सुखासनइसाधुवेठोहोइ॥ तोतिनहीश्रासनइचालइअनइजइकाउसग्गइसाधुहोइतोकाउसग्ग
इआयनीलीलाइसंवरइ॥ संयमवाडीनोसंयमीमालीरुषीजोगीचालेनिर्विकारसंयमीक्रियाविका
रइखेलनोचालइ॥ निर्विकारयइशतोयोगी॥ अनइविकारचिक्रियालब्धिफलकहियइछइ॥ तेह
नाभेदअनेकअनिमा॥१॥ महिमा॥२॥ लघिमा॥३॥ गरिमा॥४॥ प्राप्ति॥५॥ प्राकाम्य॥६॥ इशित्व॥७॥ वशि
त्वं॥८॥ अप्रतिघात॥९॥ अंतर्द्धान॥१०॥ कामरूप॥११॥ एकादशविकारलब्धिसाधुजइकरइतोइसा
प्रकारकेरे॥ किसाजीतेविकारजेसाधुतत्तयकेवलइकरे॥ अणिमारिद्धितेकहिये॥ जेअतिसूक्ष्म
नाक्रोशरीरविकवइकमलनालनोश्राकाशश्रंमंतरकोतिहानिराबाधपनइरहे॥ एकइप्रदेशइ॥
स्थानकिइसोसूक्ष्मशरीरकीजेतेअनिमारिद्धिकहिये॥१॥ बीजीमहिमारिद्धितेकहिये॥ जेवक्रव ॥१२२॥
र्त्तिनीसंपदानीयजावइ॥ अनइलाषजोजनकोशरीरनीपजावेमहिमारिद्धितेकहिये॥२॥ त्रीजील
घिमारिद्धितेकहिये॥ जेवायराथीपरिहलवोशरीर॥ चोथीगरिमारिद्धितेकहिये॥ वज्रफतीभीरि
हलावीचलावीनेसकिये॥ तेगरिमारिद्धिकहिये॥४॥ पांचमीप्राप्तिरिद्धितेकहिये॥ जेभूमिऊपरि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बोधनी ॥ निःसंदेहप्रज्ञाश्रवणकहिये ॥ जीएराउएराज्ञानमनितिनइकीनइपरमार्थकुंजेचोषे ॥ तेप्र
ज्ञाश्रवणलब्धिकहिये ॥ तिहनावलीनेइच्यारि ॥ उत्पातकीप्रज्ञा ॥ १ ॥ वैनयिकीप्रज्ञा ॥ २ ॥ कार्म्मणी
प्रज्ञा ॥ ३ ॥ पारिणामिकाप्रज्ञा ॥ ४ ॥ तत्रप्रथमउत्पातकीप्रज्ञातेकहिये ॥ जीवजेपूर्विलाभवकेसंस्का
रइउपजेबुद्धितेउत्पातकीप्रज्ञाजानिजीवनंश्रनइवीजीविनयप्रज्ञाकहियेछेजीवतुम्हकुं ॥ विज्ञा
ष्टोनयविनयः ॥ विनयकहियेजीवसाचोज्ञायकआपणोयरायोभावतिहांउलषियेविनयक
हिये ॥ द्वादशांगसूत्रभणतांसुनतांविचारतां ॥ जेविवेकज्ञानऊपजे ॥ तेविनयप्रज्ञाकहिये ॥ जीवउ
लषितेरी ॥ त्रीजीकार्म्मणीप्रज्ञातेकहिये ॥ जीवजेउग्रतपोनुष्टानकरतां ॥ आपनागुरुकीसेवा
करतां ॥ इंद्रीनाविकाररूंधतां ॥ आत्मतत्वभावनांमोहकर्म्मछोडतां ॥ गुरुकाउपदेशसुणे ॥ आप
नाकर्म्मकेफलपरनमइ ॥ करीनइस्वयमेवजेप्रज्ञाबुद्धिऊपजे ॥ तेकार्म्मणीप्रज्ञाकहिये ॥ चोथीपा
रिणामिकीप्रज्ञातेकहिये ॥ जे[illegible]रणइपरिणामकोउदयकालजिसोछे ॥ तिसीजेबुद्धिऊपजेतेपा
रिणामिकीजाननी ॥ एवंउत्पत्तिकीप्रज्ञा ॥ १ ॥ वैनयिकीप्रज्ञा ॥ २ ॥ कार्म्मणीप्रज्ञा ॥ ३ ॥ पारिणामि
कीप्रज्ञा ॥ ४ ॥ तिहांनिर्म्मलपणेपुरे ॥ तेप्रज्ञाश्रवणलब्धिकहिये ॥ २६ ॥ प्रत्येकबुद्धिलब्धितेकहिये
हंस ॥ जिहांआत्मज्ञानरसचाषीनइआपणोदर्शनज्ञानगुणउलषीनइपरभावकुंतीमनयांछो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

।।सम।। ध्धि ।। २ ।। त्रीजीतपलब्धि ।। ३ ।। चौथीमहातपलब्धिकहिये ।। ४ ।। पांचमीघोरतपोलब्धिकहिये ।। ५ ।। छठीघो
।।१२३।। रपराक्रमलब्धि ।। ६ ।। सातमीघोरगुणब्रह्मचर्यलब्धि ।। ७ ।। एवंसाततपोरिद्धिगुणप्रसेकुंइकहियेछै ।।
प्रथमउग्रतपलब्धि ।। तेहनाभेददोनि ।। एकउग्रोग्रतपलब्धि ।। अनइबीजोअवस्थितोग्रतप ।। प्रथ
मउग्रोग्रतपतेकहिये ।। जेएकउपवासपारणोकरीनइ ।। आगेबिउपवासकीजे ।। तेहनोपारणोक
रीनइ ।। आगेत्रिणिउपवासकीजे ।। इणीप्रकारइत्रिणिकइपारनइच्यारि ।। जवलगइजीवइ ।। तवलग
इइनीपरिएकवधतोउपवासकरे ।। तेउग्रोग्रतपोलब्धिकाधनीसाधुकहिये ।। त्रिगुप्तिगुप्ताजेधीर
वीरसंयमसूरनिरासपनो ।। जीवतनीआसात्रोडीनइ ।। जेइसोतपकरेतेउग्रोग्रतपाधनकहिये ।। अन
इबीजोअवस्थितोग्रतपसीतेकहिये ।। जेदीक्षानोप्रथमउपवासउच्चरीनइ ।। विधिपूर्वकपारणोक
रीनइ ।। पछइआपनीलीलाइएकांतरउपवासइपारणोकरे ।। अथवाबिउपवासपारणोकरे ।। इनीवि
धिपारणोकरतांअंतरायआवेविधिसुंनिर्दोषमिथ्यानपामइ ।। अनइउपवासहोइतोजेपाछे ।। एकां ।।१२३।।
तरदिनपकरेछै ।। जइएकउपवासइपारणोकरतांविचिअंतरायनोउपवासआवेतोजावजीवबि
उपवासइपारणो ।। अनइआहारकुंनमूतांवलीआहारनलाधो ।। अनइउपवासआवइ ।। आनंदसं
तोषइकरिआपनउंज्ञानजाने ।। वलीजावजीवत्रिणिउपवासपारणइआहारलेइ ।। इनीप्रकारइजे

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नितेतनतूंटैनहीनमइनही ॥ २ निपरितंतुचारणसंयमीचलतौत्रसथावरप्राणीनैहूहचाइ ॥ ३ ॥ चौथोपुष्प
चारणयोगीपुष्पऊपरिचालैतिहांनोप्राणीकोईहूहवाइनहीकोईजीवपेदनपावै ॥ ४ ॥ पांचमोपत्रचा
रणाश्रिंवरतेपानऊपरिचालैतिहांईचालतौसाधुप्राणीऊनंपीडइ ॥ ५ ॥ छठोवीजचारणसाधुवीजऊ
णागाघूमजवप्रमुखा ॥ अनेकाविधिवीजतिहाचालवीजचारणपिणितिहाचालातानेहनइसंयम
विराधनलागइ ॥ ६ ॥ सातमोश्रेणिचारणसंयमीश्रेणिडातिगमनकरइदसिणाश्रेणिजीमेनीवाहउ
तरश्रेणिवामीवाहरहीविश्रेणिकहियै ॥ तिणीदिसाइपंखीनीपरिसाधुचालैजीवणाभिएषतो ॥
७ ॥ आठमोअग्निचारणसाधुतेकहियै ॥ जेअग्निकीज्वालासपूरीतोचालैपिनिसर्वेजीवनेनोपीडइआप
नोसंयमनविराधइ ॥ ८ ॥ अत्राहतोजीश्रीगुरु ॥ एताआठप्रकारचारणमुनिवरआकाशइकिमग
तिकरैकिमचालै ॥ निरालंबमार्गीइसाधुकिनीविधइचालइ ॥ अत्राहगुरुः ॥ हेमनः ॥ असंख्यातपुण्य
कर्म्मकीसंपदासाधुऊंउदयऊइ ॥ जगत्रयकोपीहरु ॥ जगत्रयऊंपियारोनिर्विकार ॥ इंद्रीमदकोत्रो
डनहार ॥ दमणहारविकारनावकौ ॥ तेहनइवलइकरीनइ ॥ संयमवडीतिहारिद्धिफललागा ॥ तिहा
नोमालीरषवालसंयमीयोगी ॥ आपनीसंयमवाडीएषतो ॥ उपशमफलपाकामीवाआपणइ
रसइपाकाउपशमफलवाषेतो ॥ मनइकाचाफलअसंयमवाडीनाअसंयमभावफलनिस्वादाविन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बैठौ आंगुली करि मेरुपर्वत नी चूलिका स्पर्शइ ॥ चंद्रमा सूर्य प्रमुख जोतिष्क चक्र सर्व आंगुली इस्य
र्शइ ते प्राप्ति रिद्धि कहियै ॥ ५ ॥ छठी प्राकाम्य रिद्धि ते कहियै । जे भूमि ऊपरि जिम ज चालिये । तिम य
नी ऊपरि चालइ । अनइ जिम पानी माहि बूडिये तिम भूमि माहि बूडइ ॥ ते प्राकाम्य रिद्धि कहियै । अ
थवा अनेक जाति पुद्गल विकार विकरवै ॥ अनेक प्रकार शरीर नी पजावै ते प्राकाम्य कहियै ॥ ६ ॥
सातमी ईशत्व लब्धि ते कहियै । जे जगत्रय की ठकुराई ॥ तीर्थंकर देव की संपदा समोसरण प्रमुख
संपदा की ठकुराई ईशत्व कहियै ॥ ७ ॥ आठमी वशित्व लब्धि ते कहियै ॥ जे सर्व जीव कउं वश्य पनो सर्व जीव कउं
हियइ वसइ ॥ गुणानुराग ते वशित्व लब्धि कहियै ॥ ८ ॥ नवमी अप्रतिघात लब्धि ते कहियै ॥ जे जिम
आकाशइ निरालंबपनइ पंखी जाइ ॥ तिम पर्वत माहि निःशंक पनइ जानइ जिम आनो माहि जा
तां पंथी कउं आबाधा श्रम न ऊपजै तिम पर्वत मे दि जातां आबाधा न ऊपजै ते अप्रतिघात लब्धि
कहियै ॥ ९ ॥ दशमी लब्धि अंतर्धान ते कहियै ॥ जे अदृश्यीकरण कोई देखै नही अदृश्य होन की शक्ति
ते अंतर्धान शक्ति लब्धि कहियै ॥ १० ॥ एकादशमी कामरूप लब्धि ते कहियै ॥ जे एकइ कालइ सम
काल जिसा मन भावता रूप नाना प्रकार निसा नी पजावै ॥ चिंतनमात्र कालइ ते प्रकामरूप लब्धि क
हियै ॥ ११ ॥ अथानंतरं नयोरिद्धि नाभेदसात ते कहियै छै ॥ एक उपयत्त लब्धि ॥ १ ॥ बीजी दाम नतपला

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi